साधना और सेवा का संगम

30/-

वात्सल्य निर्झर

मई 2023
विक्रम संवत् 2080

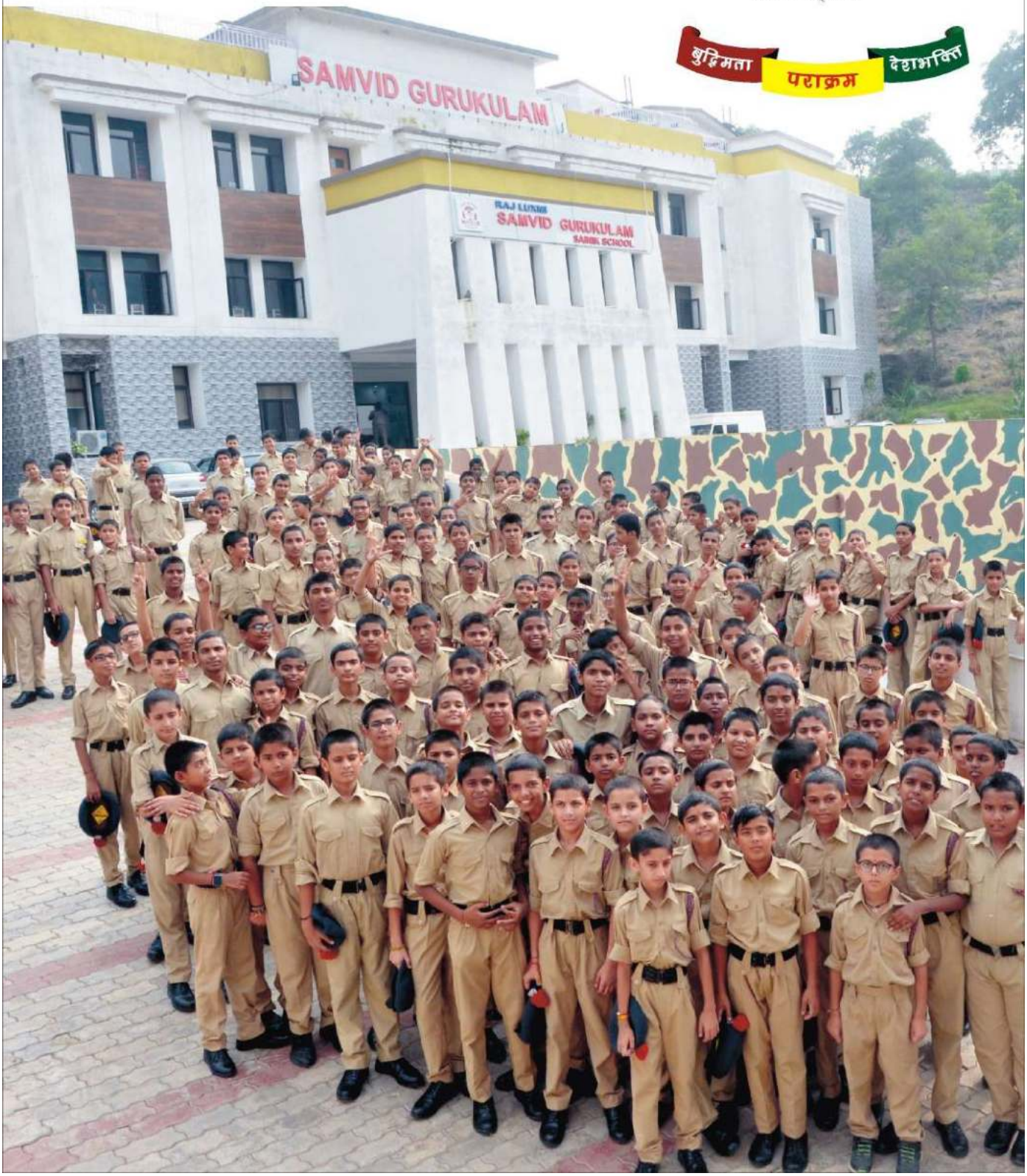

राजलक्ष्मी समविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल

वारियाँ, नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश)

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन मार्गदर्शन में

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त एवं सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अन्तर्गत संचालित

हम बच्चों के अन्दर का विजेता निखारते हैं

विशेषताएँ

- भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा अनुमोदित सैनिक स्कूल
- सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में छात्रों हेतु सुन्दर, सुखद, सुविधापूर्ण एवं सुरक्षित आवासीय व्यवस्था
- स्मार्ट क्लासेस, अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ एवं योग्य शिक्षकों का मार्गदर्शन निशानेबाजी तथा बाधारोहण जैसे पाठ्यक्रमों सहित सैन्य प्रशिक्षण
- बेडमिंटन, बास्केटबाल, वालीबाल, टेबल टेनिस, घुड़सवारी एवं मार्शल आर्ट जैसे खेलों का प्रशिक्षण
- पौष्टिक भोजन हेतु आधुनिक रसोईघर की व्यवस्था
- डॉक्टर एवं नर्स सहित चौबीसों घंटे डिस्पेंसरी सुविधा

प्रवेश संबंधी जानकारी के लिए सम्पर्क करें

ग्राम–वारियाँ, तहसील–नालागढ़, जिला– सोलन (हिमाचल प्रदेश)

+91 9412777152 +91 9999971714 **email :** admissions@vatsalyagram.org

Website : www.samvidgurukulam.org facebook : samvidgurukulam

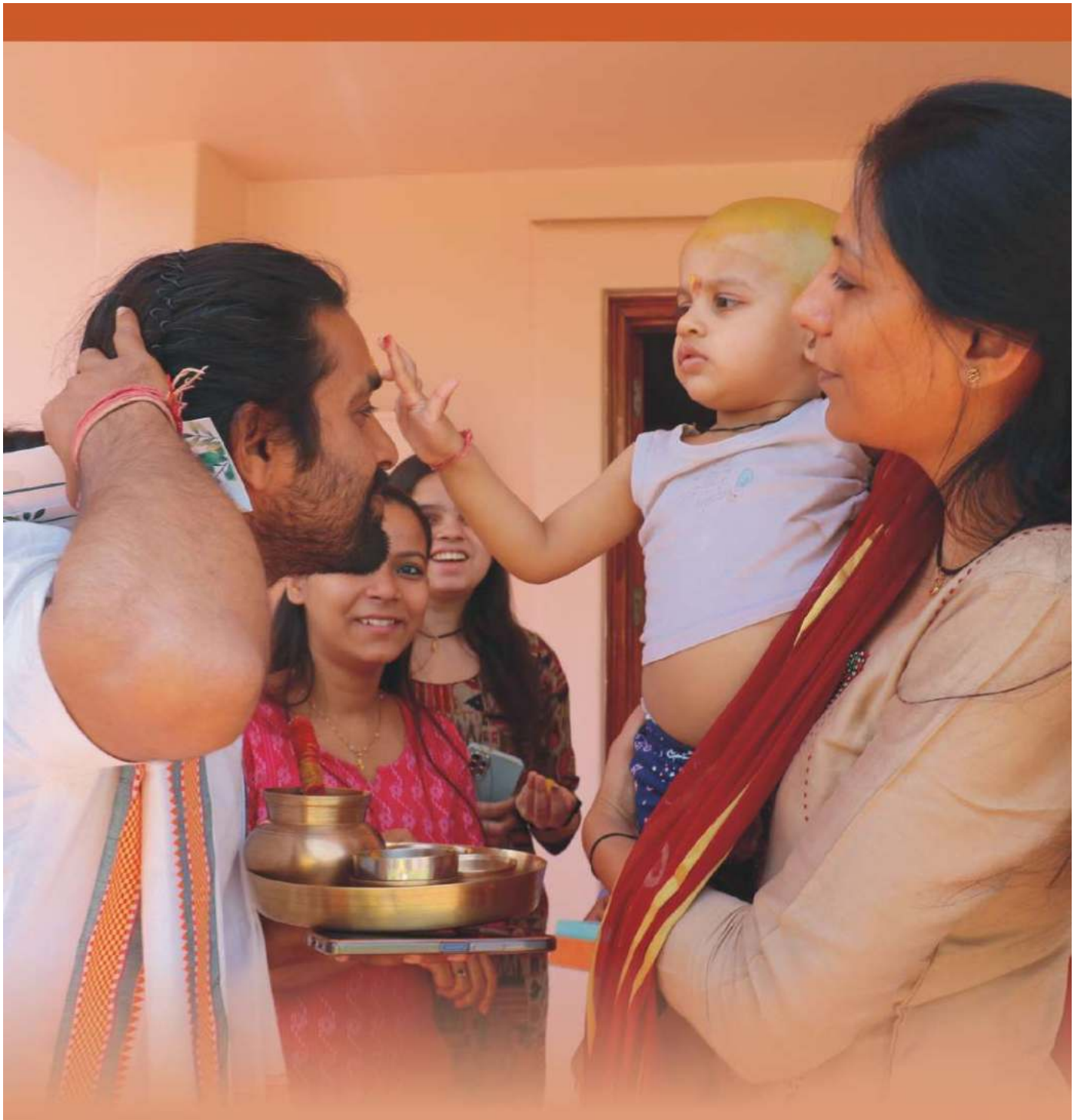

बालमन की सुकोमल की भूमि पर
रोपित सुसंस्कारों का नन्हा सा बीज
कालान्तर में पल्लवित होकर
सुसंस्कृति का वटवृक्ष बनता है...

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

साधना और सेवा का संगम
वात्सल्य निर्झर
वर्ष 22, अंक 4, मई 2023

मुख्य संरक्षक
परम पूज्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित
युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज
संरक्षक
परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी
प्रधान सम्पादक
संजय गुप्ता
प्रकाशक
परमशक्ति पीठ द्वारा संजय गुप्ता
सम्पादकीय मण्डल
देवेन्द्र शुक्ल एवं स्वास्तिका

प्रधान कार्यालय
वात्सल्य प्रकाशन, परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली -110092
दूरभाष : 011 22238751
मोबाईल सम्पर्क : 88268 64446
ई मेल : info@vatsalyagram.org
वेबसाइट : www.vatsalyagram.org
शाखा कार्यालय
वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग, पोस्ट-वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन (उ.प्र.) 281003

प्रकाशक एवं सम्पादक संजय गुप्ता द्वारा
परमशक्ति पीठ के लिए ओमवीर सिंह,
परमानन्द ऑफसेट, 1/2080, रामनगर,
शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित एवं परमशक्ति पीठ,
लव-103, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली से प्रकाशित

आवरण चित्र श्री कमलेश बाघेला की गूगल अपलोडिंग से साभार

वात्सल्य निर्झर में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उनके लेखकों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हैं। अतः उनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए लेखक अथवा रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा
परमशक्ति पीठ

अनुक्रमणिका

06 मन को ऐसे पकड़ें
08 संकल्प की दृढ़ता...
10 ये सब आखिर कब तक
12 चौरासी लाख के चक्कर से मुक्त होने का...
16 जौहर की ज्वाला आज भी...
22 विटामिन बी 12 की कमी को अनदेखा न करें
29 धर्म संस्कृति
30 युवाओं के लिए रोजगार मार्गदर्शन

अपनी बात...

-देवेन्द्र शुक्ल

केवल स्कूली शिक्षा पूरी कर लेने भर से ही कोई बच्चा एक आदर्श नागरिक नहीं बन जाता। इसके लिए उसके चहुँमुखी विकास का होना बहुत आवश्यक है। परीक्षाओं में आने वाले 'फुल मार्क्स' ही किसी बच्चे के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास नहीं कहे जा सकते, इसे हम अपने आसपास के जीवन में प्राय: देखते हैं। अक्सर देखने में आता है कि पढ़ाई में आगे रहने वाले किन्तु सामाजिक जीवन से कटे रहने वाले किसी बच्चे की तुलना में वो बच्चा ज्यादा आगे जाता है जो मार्क्स तो कम लाता रहा किन्तु सार्वजनिक जीवन से जुड़ा रहा। आशा और उमंग जिसके व्यक्तित्व की विशेषता रही। पिछले कुछ वर्षों से हम लगातार सुनते और पढ़ते आ रहे हैं कि कॉम्पिटीटिव्ह एग्जाम्स की तैयारी करवाने के लिए ख्यात कई शहरों के इंस्टीट्यूशन्स में पढ़ रहे बच्चों में आत्महत्या करने की प्रवृत्ति लगातार बढ़ रही है। आखिर क्या कारण है?

कारण है प्रतिभा विकसित होने से पहले ही उस पर महत्वाकांक्षा का सवार हो जाना। कारण है माता-पिता की वो सोच, जो अपने बच्चे को सबसे आगे देखना चाहती है। कारण है वो तथाकथित 'पैकेज' जो बच्चे को इस सोच से भरता है कि वही उसके जीवन में सबकुछ है। कारण है शिक्षा के क्षेत्र में उतर आई व्यावसायिक मानसिकता, जिसके लिए विद्यार्थी केवल कमाई का साधन भर हैं।

'शिक्षा एक दान है' शिक्षकों की ये सोच शैक्षणिक क्षेत्र का इतिहास बन गई है। एक समय था जब दुनिया भर से विद्यार्थी भारतवर्ष के विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए आते थे। उसी गुरुकुल पद्धति को भुला बैठने का दुष्परिणाम आज के विद्यार्थियों में कुण्ठा, हताशा और निराशा की देन है। पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन मार्गदर्शन में युगचेतना वात्सल्य पीठ ने देवभूमि हिमाचल प्रदेश के नालागढ़ में एक ऐसे ही गुरुकुल विद्यालय की स्थापना और संचालन को साकार रूप दिया है, जो अपने छात्रों में वैसे ही व्यक्तित्व का निर्माण कर सके, जैसा कि एक आदर्श नागरिक होना चाहिए। 'राजलक्ष्मी समविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल' हिमाचल स्थित सोलन जिले की नालागढ़ तहसील के वारियाँ गाँव में संचालित एक ऐसा शिक्षा केन्द्र है जो आधुनिक शिक्षा के साथ ही अपने छात्रों को भारतीय संस्कारों से भी सिंचित करता है।

परमशक्ति पीठ के अमेरिका निवासी दो परम सहयोगियों श्री रामजीभाई पटेल एवं श्री अवधेश अग्रवाल ने इस विद्यालय भवन के लिए अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया। कारण था विदेश में रहकर भी भारतीय बच्चों के समग्र विकास की भावना। वर्ष 2019 में 'राजलक्ष्मी समविद गुरुकुलम् स्कूल' के प्रथम शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ हुआ। इसकी आधारभूत व्यवस्थाओं और शैक्षणिक गुणवत्ता से प्रभावित होकर भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय ने वर्ष 2022 में इसे एक 'सैनिक स्कूल' के रूप में अपनी मान्यता प्रदान की। हिमाचल के प्राकृतिक वातावरण में पर्वतों और हरियाली के बीच 'समविद गुरुकुलम्' स्कूली शिक्षा के साथ योग एवं खेलकूद गतिविधियों के साथ छात्रों को सैन्य प्रशिक्षण के माध्यम से राष्ट्र भावना एवं सामाजिक दायित्वों के बोध से भरता है। 'प्रत्येक छात्र के भीतर अद्वितीय संभावनाओं का भण्डार है' इस भावना के साथ यहाँ के शिक्षक उनकी प्रतिभा को समग्र रूप से तराशते हैं। समय-समय पर इन छात्रों को पूज्य गुरुदेव अनन्तश्री विभूषित श्री युगपुरुष जी महाराज एवं दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी जैसी आध्यात्मिक शक्तियों का प्राप्त होने वाला सानिध्य उनके भीतर के आत्मबल में भी वृद्धि करता है।

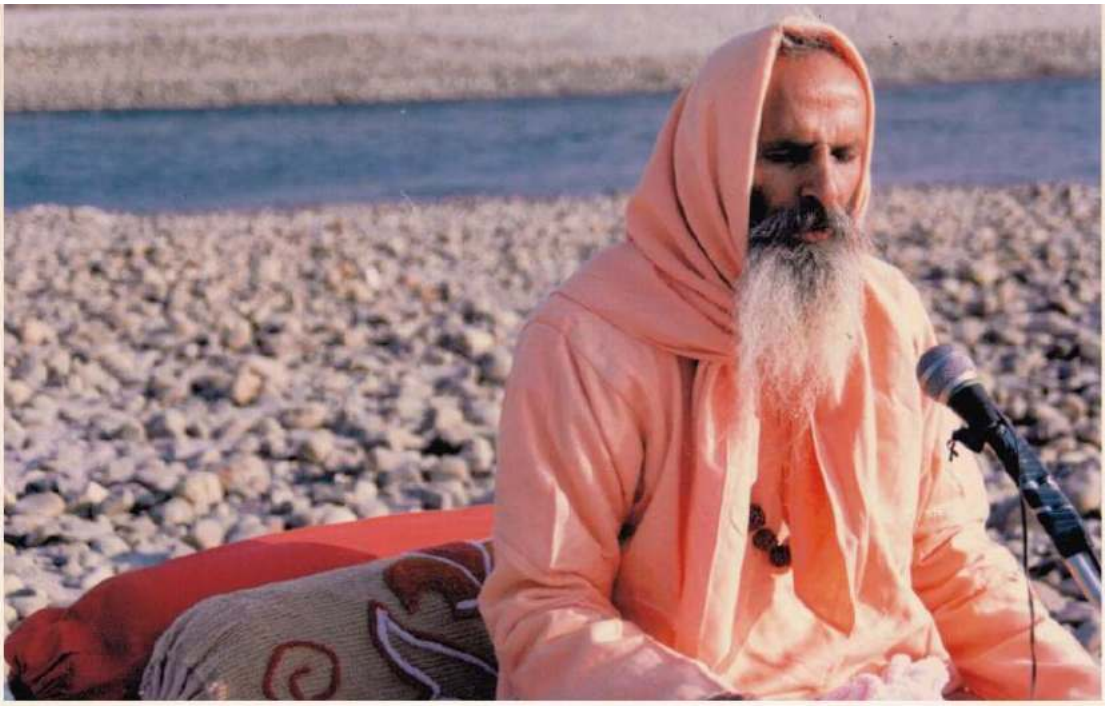

मन को ऐसे पकड़ें

– युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

अपनी मंजिल पर पहुंचने के लिए, जो थोड़े कमजोर हैं, पहले ही चल पड़ते हैं। कहीं देर न हो जाए इसलिए वो पहले से ही चलने की तैयारी शुरू कर देते हैं। जो चलने में तेज हैं, उन्हें पहले चलने की जरूरत नहीं पड़ती। जैसे हम सब ईश्वर की ओर चल रहे हैं। यदि हम हमारी बात करें तो हम समझे समझाएं हैं इस मार्ग पर चलने के लिए लेकिन बहुत से ऐसे लोग हैं, जिन्हें अभी समझाना शेष है। तो हमें उन सबको भी साथ लेकर चलना है इसलिए हमें भी धीरे-धीरे चलना होता है। नहीं तो सबको समझा नहीं पाएंगे। इसीलिए वेदान्त कहते समय हम इस बात का ध्यान रखते हैं कि तुम कितना चलोगे। किसी को भी उतना ही चलना चाहिए जितना कि उसके साथी चल सकें। हमारा लक्ष्य भी केवल प्रवचन करना नहीं बल्कि आपको वहाँ तक पहुंचाना लक्ष्य है। पहुंचाना या समझाना शब्द का प्रयोग भी हमारी मजबूरी है आपके कारण अन्यथा हम न तो पहुंचाने की बात करें और ना ही समझाने की। ये सब आपके कारण बोलने पड़ते हैं क्योंकि आप अपने को अभी समझे नहीं हो। यदि आप जन्मते मरते नहीं तो आप यहाँ क्यों आते। आप मुक्त हैं यदि ऐसा आपको पता होता तो इस कार्यक्रम से आपका क्या लेना-देना था। इसका मतलब हम समझ गए आपकी भावना कि आप बँधे हुए हो। ये हम समझ गए कि आपके सामने बहुत समस्याएँ हैं। उन सबको सुलझाने की दृष्टि से हम बोलते हैं। अभी बड़ी अच्छी चर्चा सुन रहे थे। हर महापुरुष कुछ न कुछ अच्छी बात दे जाते हैं।

एक ये कि अन्तःकरण में चिदाभास पैदा होता है। वो चिदाभास फिर देह और इन्द्रियों से तादात्म्य करते हुए पुनः इस संसार को पाने के प्रयास में जुट जाता है। यह एक क्रम है लेकिन आपकी ये यात्रा धोखे में होती है। अनजाने में होती है। इतनी यात्रा तो कुत्ते और बिल्ली भी करते हैं। हर जीव जगत तक आ जाता है लेकिन वो ये नहीं जानता कि मैं कहाँ से, कैसे और किसलिए आया। इस जगत में आने में किसी में कोई फर्क नहीं है। सब एक जैसे ही आते हैं। अभी सुन रहे थे कि पहले बिजली से बल्ब में रोशनी आई। फिर उसके आगे और कुछ लगा हो तो उसमें पहुंचेगी। जैसे मैं अक्सर बताता हूँ कि एक बल्ब के आगे पीला काँच लगा दें तो लाइट पीला होगा लेकिन बल्ब के भीतर दो तारों की बिजली से जो प्रकाश प्रकट होता है तो उसका कोई रंग नहीं होता लेकिन जब वो पीले काँच को पार करता है तो वो रंगीन हो जाता है। मैं अपने अनुभव की बात करता हूँ कि सबसे पहले न वो तार जले और ना ही बल्ब जला। वो काँच जला जो बाहर दिखाई दे रहा है।

हमारी जो स्थिति है, हम सीधे इन्द्रियों पर होते हैं। उनसे देखते, सुनते या भोगते हैं। प्रथम दृष्टया बस यही हमारी दुनिया है। इन्द्रियों तक हम आते जरूर हैं। जैसे बल्ब की रोशनी बाहर के काँच तक तभी पहुंची है जब वो पहले बल्ब के दो मिले हुए तारों में प्रकट हुई, बल्ब के बाहर आई और उसके बाद भी किसी कव्हर से अपने रंग को बदलती हुई हम तक पहुँची।

ऐसे ही जब हम बाहर के जगत को देखते हैं तो इतनी यात्रा हमारी हो चुकी होती है। छोटा बच्चा जब जन्मता है तब आँखें खोलकर दुनिया देखता है। यद्यपि दुनिया देखने से पहले भी वो गर्भ की दुनिया में था। देह को महसूस करने के पहले जगता है तब वो देह का महसूस कर पाता है। देह को महसूस करके नहीं जगता बल्कि पहले जगता है तब उसे अपना देह महसूस होता है। परन्तु जैसे दीपक जलाते समय हमने ध्यान दिया होगा कि एक दीपक है, बाती है, तेल है, जिसे आपने एक-दूसरे से सामंजस्य करके जला दिया तो प्रकाश हो गया। अब यदि ये रोशनी जीवित है तो उसके साथ तेल और बाती सतत् काम करते हैं। फिर भी हम दीपक, तेल और बाती को रोशनी नहीं कहते। हम उस ज्योति को ही रोशनी कहते हैं, जिससे प्रकाश होता है। परन्तु यदि हम तेल हटा दें तो क्या होगा? कुछ ही क्षणों में ज्योति गायब। ऐसे ही यदि हम शरीर को हटा दें तो आत्मा रहेगी क्या? वो शरीर से गई। भले ही तेल ज्योति नहीं है लेकिन ज्योति जिसे आप जान रहे हो, वो तो तेल और बाती के कारण है। जिस शरीर में अभी मन काम करता है, अभी ऐसा लगता है जैसे तन है, तो ही मन है। ऐसा कभी अनुभव नहीं होता कि तन नहीं है तो मन है। लेकिन इसकी यात्रा भी आप कर सकते हो।

तो हम इस शरीर में जाग्रत रहकर, इन्द्रियों में जाग्रत रहकर पहले दृश्य से इन्द्रियों की ओर तथा इन्द्रियों से जाग्रत रहकर मन की ओर, फिर मन में जाग्रत रहें। कल हमने एक बात बताई थी कि सूर्य का रिफ्लेक्शन पहले शीशे में पड़ा, पहले शीशे का रिफ्लेक्शन दूसरे शीशे पर पड़ा और अब दूसरे शीशे का रिफ्लेक्शन पाँच अन्य शीशों पर पड़ रहा है। एक को हटाएं या पाँचों को लेकिन उनका प्रकाश पदार्थों पर पड़ता है। पदार्थों को प्रकाशित करने में वो शीशे काम करते हैं। परन्तु जो प्रकाश उन पदार्थों को प्रकाशित कर रहा है, उसे पीछे के शीशों का कुछ पता नहीं है। उसी प्रकार इन्द्रियों के द्वारा जगत को प्रकाशित करने वाला ये प्रकाश जगत को देखते की इच्छा छोड़ दे तो देखना पीछे मुड़ जाएगा। यदि इन्द्रियों की जरूरत न समझे तो समझो कि हम और भीतर वाले शीशे में आ गए। बहुत ही सरल तरीका है देखने का। यदि हम पदार्थ देखेंगे तो इन्द्रियों के द्वारा और इन्द्रियाँ देखेंगे तो मन काम करेगा। मन को देखेंगे तो विवेक शक्ति, बुद्धि शक्ति थोड़ा साथ देगी। मैं एक और बात बताऊँ कि मान लो, उन पाँच शीशों में से मैंने एक को एकाग्र कर दिया और उसका प्रकाश इस पांडाल में डाल रहा हूँ। तो दूसरा और तीसरा शीशा इसका साथ दे रहे होंगे कि नहीं? यदि पहला और दूसरा शीशा हिला दूँ तो तीसरा शीशा पांडाल को प्रकाशित नहीं कर पाएगा। तो ध्यान की एक सरल प्रक्रिया ये भी है कि हम किसी भी शीशे को पूरी ईमानदारी से एकाग्र कर दें तो पहले और दूसरे शीशे ठहर जाएंगे। यद्यपि ठहराने का हमें कोई तरीका नहीं आता फिर भी यदि हम लगातार अपनी दृष्टि को दृश्य में ठहरा दें तो हमारा मन भी ठहर जाएगा। या तो फिर दृश्य जिसे देख रहे हो वहाँ से चित्त हट जाएगा। तो हमने मन को एकाग्र नहीं किया बल्कि अपनी दृष्टि को एकाग्र किया। अपनी दृष्टि बराबर एक ही जगह टिका दी तो मन टिक गया। हमें मन टिकाना नहीं आता। हमने कोई प्रैक्टिस नहीं की। हमें केवल देखना आता है और यदि इस देखने को टिका लिया जाए तो मन टिक जाएगा। आप बस सुनते रहें। भले ही शब्द न हों लेकिन शब्द के अभाव को सुनें। बस अपने कान न छोड़ें। तो मन कहाँ रहेगा?

तो ध्यान का सरल तरीका है कि जो आप कर सकते हैं, प्रारंभ उसी से करें। आपको देखने का अभ्यास है तो उसी को करें। आपको सुनने का अभ्यास है तो उसी को करें। कोई आरती करते हो तो बस एकाग्र होकर अपनी जुबान से बोले जाओ। यदि सम्पूर्ण ध्यान के साथ बोलोगे तो मन अपने आप एकाग्र हो जाएगा। मन यदि सीधा पकड़ में नहीं आए तो फिर यही तरीका है। इसके बाद की स्थिति यह है कि जुबान से जप करना भी छोड़ दो। आँखों से देखना बन्द कर दो। कानों से सुनने की भी जरूरत नहीं। भले ही कानों से सुनाई दे रहा हो। मैं आँखों से देखने नहीं बैठा हूँ, भले ही दिखाई देता रहे। मैं कानों से सुनने नहीं बैठा हूँ, भले ही सुनाई देता रहे। मैं जुबान से कुछ चखने नहीं बैठा। मैं हाथों से माला जपने नहीं बैठा। मैं तो केवल मन से सुमिरन करने बैठा हूँ। कोई अंग की आवश्यकता नहीं। मैं केवल मन से नाम सुमिरन करूँगा। ध्यान रहे कि जाप बिना मन के भी हो सकता है लेकिन देखना और सुनना बिना मन के नहीं हो सकता। क्यों? क्योंकि चेतना के लिए चैतन्य चाहिए।

किसी भी काम में मन के भटकने की संभावना रहती है इसलिए पहले उसे मन लगाकर करें फिर मन से ही करें। पहले मन लगाकर देखें, मन लगाकर सुनें, मन लगाकर जपें। यदि अपने सारे कार्य आप मन लगाकर करें तो मन की जो चंचलता है, मन का जो बिखराव है, वो समाप्त हो जाएगा। कोई भी कार्य मन की सम्पूर्ण एकाग्रता के साथ करो। अगली स्थिति में कोई भी कार्य किसी इन्द्री से मत करो। जो करना है केवल मन से करो। कार्य में भौतिक रूप से इन्द्रियों की सहभागिता तो होगी लेकिन आपका ध्यान केवल मन पर रहे। कहीं-कहीं पर तो इन्द्री भी नहीं। जैसे भगवान के हाथ मन से ही जोड़ो। दोनों हाथों को जोड़ने की जरूरत ही न पड़े।

(https://www.youtube.com/watch?v=YAArOrsvMQ से साभार)

संकल्प की दृढ़ता सामर्थ्य पैदा कर देती है

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

आशीष सहज रूप से अपनों के लिए होता ही है। अनुकूलता हो या प्रतिकूलता, उन सबके बीच में कार्य करने की जो निष्ठा होती है, वो जितनी बलवती होती है उतना ही हम पर आशीर्वादों की वर्षा होने लगती है। प्रत्यक्ष देवों के द्वारा, अज्ञात शक्तियों के द्वारा, हमारे गुरुजनों और अग्रजों के द्वारा और कहीं न कहीं हमारे आत्म बल के द्वारा भी हम आशीषित हो जाते हैं। हमारा संकल्प ही हमारा रक्षा कवच बन जाता है। संकल्प की दृढ़ता पैरों की गति बन जाती है। उन संकल्पों को पूर्ण करने के लिए अपना दिया हुआ श्रम और उसके श्रम बिन्दु हैं, हमारे लिए संतुष्टि के मोती बन जाते हैं। हम जब परिश्रम रूपी यज्ञ में स्वयं को आहुति बनाकर अर्पित करते हैं और उसके बाद मुट्ठी भर जो भस्मी बचती है वो सुरभि बनकर, निराकार होकर, कण-कण में, दिग्दिगंत तक व्याप्त हो जाती है। फिर उस यज्ञ से प्रकट होने वाली सामर्थ्य हम स्वयं बन जाते हैं।

चराचर सृष्टि के साथ हमारी स्वाभाविक एकात्मता है क्योंकि जो पिण्ड में है, वही तो ब्रह्माण्ड में भी है। तो फिर इतने बड़े ब्रह्माण्ड का यज्ञ कुण्ड कौन? इसमें स्वयं को अर्पित कर देने वाली समिधा कौन? अन्त में भस्मीभूत होकर जो चारों ओर फैली, वो खूशबू कौन? उसका परिणाम क्या हुआ? इन प्रश्नों के उत्तर में हम स्वयं को ही देखेंगे। पुजारी, पूज्य, पूजा की तृप्ति, उस तृप्ति से मिला संतोष और फिर उसका गहरा आनन्द। हमारी एक इकाई में ही ये समस्त समा जाता है। इसलिए सदा से जो भारतीय चिन्तन रहा, वहाँ कर्मकाण्ड का एक समय निश्चित किया गया, साथ ही दृष्टि ये दी गई कि हर क्षण हमारे द्वारा किया गया सुकर्म ही हमारी पूजा है। इसलिए हमारे नित्य पूजा-पाठ में यदि कोई अनियमितता भी आई लेकिन हम हमारे कर्म क्षेत्र में निरन्तर लगे रहे तो उसकी जो संतुष्टि है वो हमारे व्यक्तित्व की आभा बनकर सहज रूप से चारों ओर चमकने लग जाती है। इसीलिए हमारे यहाँ यह दृष्टि दी गई कि

चलूँ-फिरूँ सोई परिकरमा।
खाऊँ-पियूँ सो पूजा।।
सोए जाऊँ सो लगे समाधि।
भाव मिटाया दूजा।।

कदाचित्, इस दिव्य दृष्टि को धारण किया व्यक्ति फिर व्यक्ति नहीं रहता, वो साक्षात् विराट होता है। फिर वो बिन्दु से सिन्धु हो जाता है। क्योंकि उसके चिन्तन की उदात्त भावना फिर उसको व्यक्ति नहीं रहने देती। उसका चिन्तन समष्टिगत हो जाता है। आज जब हम लोगों की चित्तवृत्तियों को केवल रोटी, कपड़ा और मकान में ही लिपटा देखते हैं तो लगता है कि ऐसे लोग कौवे से ज्यादा कुछ और नहीं हैं क्या! क्योंकि मात्र उदर पोषण करना तो पशु वृत्ति है। मात्र अपना उदर पोषण ही मनुष्य का उद्देश्य नहीं हो सकता। हाँ, उदरपूर्ति भी चाहिए क्योंकि भूख हमें भोजन के लिए विवश करती है, लेकिन मात्र भोजन ही जिंदगी का उद्देश्य नहीं हो सकता। ये तो पशु-पक्षियों की वृत्ति है जिनकी पूरी दिनचर्या केवल भोजन के आसपास ही घूमती है।

विचार कीजिये कि कैसा सुन्दर भारत था अतीत का! जिस भारत के मस्तिष्क में हमेशा कंचन, कामिनी और वस्तुएँ नहीं बल्कि उनको त्यागपूर्वक भोगने की भावना होती

थी। ऐसा भारत व्यक्तित्वों का निर्माण किया करता था। आज दुनियाभर में लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ हैं लेकिन उनके बीच जिस प्रकार की मारामारी है, जैसी दुष्टताएँ हैं, जिस तरह का भेदभाव है, बड़ी-बड़ी अट्टालिकाओं की बगल में फैली झोपड़ियों की अन्तहीन कतारें हैं, रोटी का तरसती आँखें, चिपके हुए पेट, गिड़गिड़ाते हुए होंठ और पाँच साल की बच्ची से लेकर पैंसठ साल की वृद्धा तक में भी केवल शरीर देखने वाली वासना से भरी दृष्टि है... यह सब देखकर मन में गहरी व्याकुलता पैदा होती है। फिर स्मरण होता है कि हम कहाँ थे और कहाँ आ गए।

विचार आता है कि शिक्षक ही हैं जो समाज के बीच उत्तरदायित्वों से परिपूत एक पीढ़ी को तैयार करते हैं। उनके हाथ में आए बच्चे कच्ची मिट्टी के लौंदे जैसे होते हैं। वे ब्रह्मा जी की भूमिका में उनको आकार देते हैं, आधार देते हैं। भले ही माता-पिता के संसर्ग से संतानों की निर्मिती होती है लेकिन उनके भीतर व्यक्तित्व का निर्माण तो विद्यालयों की गोद में ही होता है, जिसमें उनके शिल्पकार के रूप में अध्यापक और अध्यापिकाएँ होते हैं। लेकिन क्या आज का प्रत्येक शिक्षक कभी ये सोचता है कि विद्यार्थियों को धन कमाने लायक डिग्री दिलवाने की पूरी प्रक्रिया के बीच उसमें एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण कैसे किया जाए? मैं सोचती हूँ कि भारत तब तक आदर्श स्थितियों में नहीं पहुँचेगा जब तक कि उसके टकसाल रूपी प्रत्येक विद्यालय में मनुष्यों को गढ़ने की प्रक्रिया आरंभ नहीं होगी।

एक शिक्षक को ईश्वर ने अवसर दिया है। विद्यार्थियों की चित्त-चेतना को गढ़ने में इस अवसर वह कितना उपयोग कर सकता है, यह विचार करने योग्य विषय है। आज के इस दौर में यह कोशिश जरूर करनी चाहिए कि हमारे विद्यालय व्यावसायिक केन्द्रों का रूप ना ले लें। हमने वर्षों पहले ऐसा ही एक प्रयोग वात्सल्य ग्राम, वृंदावन की भूमि पर 'समविद गुरुकुलम् विद्यालय' के रूप में किया था। आज मुझे बताते हुए गर्व होता है कि हम यहाँ प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों के साथ आधुनिक शिक्षा देने में सफल रहे हैं। जैसी भी व्यवस्थाएँ रहीं, उनके बीच ही यहाँ कार्यरत् शिक्षक-शिक्षिकाओं ने छात्राओं के भीतर आदर्श व्यक्तित्वों के निर्माण का पूर्ण प्रयत्न किया। ऐसे सभी कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकवृंदों को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए मैं विचार करती हूँ कि सारे समाज के बीच जल्दी ही एक ऐसी मानसिकता जन्म ले जिसके अन्तर्गत सब लोग अपनी-अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करें। पहले जब संयुक्त परिवार हुआ करते थे तो उनमें प्रत्येक सदस्य की अपनी जिम्मेदारी हुआ करती थी। कौन बहू आटा गूँथेगी, कौन बहू सब्जी काटेगी, कौन बहू बर्तन साफ करेगी, कौन बेटा बाजार का क्या काम करेगा। घर का सारा कुछ काम एक तय व्यवस्था के अन्तर्गत ही चलता था। आज क्या स्थिति है देश और समाज की? प्रायः किसी भी काम को लेकर समाज सरकार की तरफ और सरकार समाज की तरफ देखते हैं। भाई, ये तो हम सबकी साझा जिम्मेदारी है ना कि समाज और राष्ट्र की व्यवस्थाएँ सुचारू रूप से चलती रहें। सरकारें हों या समाज, हम सबको असीम जिम्मेदारियों को स्वीकारने की सामर्थ्य रखनी चाहिए।

हम लोगों ने संकल्पबद्ध होकर वात्सल्य ग्राम, वृंदावन में माँ भगवती के मन्दिर का निर्माण शुरू किया। इसी बीच वर्ष 2013 में उत्तराखण्ड आपदा हो गई। परमशक्ति पीठ ने एक बड़ी धनराशि के साथ वहाँ राहत एवं पुनर्वास का काम शुरू कर दिया। यहाँ अनेक गाँवों में काम चल ही रहा था कि वर्ष 2015 में नेपाल भूकम्प आपदा ने मानस को झकझोर कर रख दिया। हम लोग वहाँ दौड़ पड़े। राहत सामग्री वितरण के साथ ही तीन गाँवों में सौ-सौ अस्थायी घरों के निर्माण का संकल्प कार्यरूप में उतरा। अब सहज ही किसी के मन-मस्तिष्क में यह बात आ सकती है कि दीदी माँ तो सीमित संसाधनों के बीच भी अपने कार्यों का लगातार विस्तार करती जाती हैं।

मैंने अपने सद्गुरुदेव से सीखा है, समाज के बीच असीम जिम्मेदारियों को स्वीकारना। लेकिन साथ ही यह भी सीखा कि हम जिम्मेदारियों के साथ न्याय कर सकें। जब हम किसी जिम्मेदारी को संकल्पपूर्वक संभालते हैं तो फिर उसे पूरा करने की सामर्थ्य भी हममें आ जाती है। जिम्मेदारी लेने और उसे पूरा करने का प्रयत्न करने के लिए ऊर्जा चाहिए होती है। ऊर्जा कहाँ से मिलेगी? भोजन से? हाँ, भोजन से ऊर्जा तो जरूर मिलेगी, लेकिन शरीर को। मन को कहाँ से मिलेगी? जब हम ईश्वर को चारों ओर अनुभव करते हैं तब हमारे प्राणों में, हमारे मन में ऊर्जा का संचार होता है। 'किसी और का भला करने से हमारा ही भला होगा' जब यह भाव हमारे भीतर प्रकट होता है तो फिर हमारे भीतर नव ऊर्जा का संचार होता है।

मैंने अपने सद्गुरुदेव से सीखा है, समाज के बीच असीम जिम्मेदारियों को स्वीकारना। लेकिन साथ ही यह भी सीखा कि हम जिम्मेदारियों के साथ न्याय कर सकें। जब हम किसी जिम्मेदारी को संकल्पपूर्वक संभालते हैं तो फिर उसे पूरा करने की सामर्थ्य भी हममें आ जाती है।

ये सब आखिर कब तक

(भाग-1)

- भानुप्रताप शुक्ल

(यह लेख 24 नवम्बर 1991 को लिखा गया है)

भारतवर्ष सम्पूर्ण भौगोलिक और भौतिक सृष्टि का एक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सनातन सत्य है। यहाँ के राष्ट्रीय समाज अर्थात् हिन्दू के जीवन दर्शन, संस्कृति एवं इतिहास, उसका तप, त्याग, शौर्य, चिन्तन और चिति ही भारत की चेतना और जिजीविषा है। हिन्दू समाज और उसके द्वारा सृजित भारतीय जीवन दर्शन को अमान्य करना, प्रकृति प्रदत्त मानवी धर्म का निषेध करना है। भारत के राष्ट्रीय समाज ने गत हजारों वर्ष से जिस समन्वित भाव, सम्वेदनात्मक अनुभूति, समादर और समभाव की सृष्टि की है, वही अथ को अन्त से जोड़ने वाला अनन्त सूत्र है।

न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य, जीव और शिव की स्पष्टता केवल भारत की ही देन है। विश्व के शेष देशों ने भारत की जूठन खाकर नैतिकता-अनैतिकता और न्याय-अन्याय का अपने-अपने परिवेश में प्रतिपादन किया। बहुत प्रयास करके भी वे अपने स्वार्थ की भूमि सीमा को पार नहीं कर पाए। उनके चिन्तन की सीमा भूगौल की भौतिक सीमा में ही बँधी रही, जबकि भारत द्वारा सृजित असीम और अनन्त दर्शन ने भौगोलिक और भौतिक सीमाओं को लांघकर जड़-चेतन ब्रह्माण्ड को भी व्याप्त किया। यही वह एकमेव कालजयी दर्शन और सनातन जीवन दृष्टि है, जो समय और परिस्थिति निरपेक्ष है और जिसमें कालबाह्य व्यवस्था, विचार और प्रवृत्ति को अमान्य करके सनातन और शाश्वत जीवन दर्शन के प्रकाश में काल सापेक्ष व्यवस्था निर्माण करते रहने की क्षमता है। प्रलय के बाद नव सृजन के समस्त तत्व इसी जीवन दर्शन में विद्यमान हैं।

इतना महत् जीवन, इतनी महत् परम्परा, इतना महत् तप और त्याग, इतनी सहज परिस्थिति निरपेक्षता, परिस्थिति में परिवर्तन की इतनी अपरिमित और अचूक क्षमता, मनुष्य को ईश्वर प्रदत्त दायित्व का बोध कराने का इतना महत् ज्ञान, सृष्टिकर्ता और त्रैलोक्य के नियन्ता का केवल मानसी नहीं, प्रत्यक्ष साक्षात्कार करने वालों का वंशज, 'मैंने उस हिरण्मय को अपने चर्म-चक्षुओं से देखा है' का उद्घोष करने वाले ऋषियों की सन्तान, प्रत्यक्ष परमेश्वर की मानवी लीला भूमि का राष्ट्रीय समाज पग-पग पर और प्रतिक्षण अपमानित हो, उसकी राष्ट्रभक्ति को साम्प्रदायिक और उसके प्रिय राष्ट्र के लिए घातक बताया जाए तो इसे क्या कहा जाएगा? किस रूप में और किन शब्दों में इसकी मीमांसा की जाए? एक शब्द में कहें तो 'नादानी', और एक वाक्य में कहें तो 'आत्मनाश का आमंत्रण।'

सचमुच यही हो रहा है आज। हमें आत्मनिन्दा में आनन्द आता है। अपने पूर्वजों को प्रताड़ित करने में हमारा प्राण प्रफुल्लित होता है, अपने अपराधों पर हमें अब आत्मग्लानि नहीं होती। आत्मप्रवंचना प्रगतिशीलता और सद्भाव का पर्याय बन गई है। अपनी राष्ट्रीय अस्मिता के विरुद्ध गिरोहबन्द होने को राष्ट्रीय एकात्मता का अनुष्ठान माना जाने लगा है।

कहते हैं कि भारत का राष्ट्रीय समाज, भारत के वे लोग जिनके रक्त में भरत की माटी का रस है, जिनकी साँस-साँस में भारत का पवन समाया हुआ है, जिनके रोम-रोम से भारत-भारत के अतिरिक्त और कोई शब्द निःसृत नहीं होता, भारत का अतीत, वर्तमान और भविष्य ही जिनका त्रिकाल है, भारत की धरती की सुगंध ही जिनके जीवन की सुगंध है, जो भारत को चैतन्यमयी माता की तरह पूजते हैं, भारतमाता का रक्त जिनका रक्त है, जिनके प्राणों की

धड़कन माँ भगवती भारतमाता के प्राण स्पन्दन के साथ सम्बद्ध है, जिनका भारत के अतिरिक्त न कोई आस है, न कोई वास है, वे और उनका समाज इस देश में साम्प्रदायिक हैं? आतंकवादी हैं? दंगाई हैं? संकीर्ण हैं?

कहा जाता है कि हिन्दुत्व के आग्रह के कारण देश की आजादी और अखण्डता खतरे में पड़ जाएगी। यह सब जानते हुए और जान बूझकर कहा जाता है कि भारत का भूगोल उतना ही बड़ा होता है और भारत की राजनीतिक सत्ता वहीं तक चलती है, जहाँ भारत का राष्ट्रीय अर्थात् हिन्दू समाज बहुमत में और समर्थ होता है, यह भी कि उस क्षेत्र में अलगाव का अभियान नहीं चलता। वह भूखण्ड भारत की मूल भूमि के साथ मत, प्राण सहित एकात्म रहता है और इसके विपरीत जहाँ-जहाँ हिन्दू अल्पमत में होता है और दूसरे समुदाय अर्थात् मुसलमान और ईसाई बहुमत में हो जाते हैं, उस भूखण्ड में भारत से अलग होकर एक स्वतंत्र सार्वभौम समानान्तर राष्ट्र-राज्य का निर्माण करने की मांग बलवती हो जाती है। वे क्षेत्र या तो भारत से अलग हो जाते हैं या फिर विधान और विधि के अन्तर्गत विशेष दर्जा और विशेषाधिकार प्राप्त कर लेते हैं।

यह इतिहास सिद्ध तथ्य है कि भारत के राष्ट्रीय समाज अर्थात् हिन्दू के सिकुड़ने के साथ-साथ भारत की सीमाएँ भी सिमटती जाती हैं। कभी अफगानिस्तान भारत की सीमा थी और अब पाकिस्तान की पूर्वी सीमा भारत की सीमा है। कभी ब्रह्मदेश भी भारत था, अब पूर्वी बंगाल (बंगलादेश) की पश्चिमी सीमा तक भारत सिमट आया है। कश्मीर में हिन्दू जनसंख्या कम हुई तो वहाँ के बहुसंख्यकों और शेष भारत में अल्पसंख्यकों अर्थात् मुसलमानों ने 'कश्मीरी राष्ट्र' के लिए बंदूकें उठा लीं। पूर्वांचल की ईसाई बहुलता के साथ-साथ एक असम छह राज्यों में बँट गया। यह बँटवारा प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए नहीं अपितु ईसाई अलगाववाद द्वारा भारत विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र की सफलता का परिणाम है। केरल के मल्लापुरम् को मुस्लिम बहुलता के कारण कम्युनिस्टों ने एक अलग मुस्लिम जिला बना दिया। किन्तु हिन्दू! हिन्दू यह सब नहीं करता। वह केवल हिन्दुस्तानी है, केवल भारतीय है। हिन्दुओं को भाषा, क्षेत्र और राज्य रचना के नाम पर बाँटने के समस्त प्रयासों और राजनीतिक स्वार्थों के बाद भी उनकी राष्ट्रीय एकात्मता और सांस्कृतिक समग्रता अक्षुण्य ही रही। विभिन्न राष्ट्रीयताओं के अनर्गल प्रलापों के बावजूद कन्याकुमारी से कश्मीर तक वह एक ही राष्ट्र और एक ही भारतमाता का दर्शन करता है।

फिर भी तथाकथित प्रगतिवादियों, नकलची आधुनिकतावादियों और पश्चिमी गुरुओं के शिष्य बुद्धिजीवियों की दृष्टि में भारत की राष्ट्रीय अस्मिता, इसके आत्मसम्मान के प्रति एकान्तिक निष्ठा और आग्रह रखने वाला समाज और लोग 'साम्प्रदायिक' हैं। भारत की आत्मा पर 'अपमान की कालिख' स्थाई रूप से लगे रहने को वे सर्वधर्म समभाव का प्रतीक मानते हैं। कहानियाँ गढ़ी गईं कि अयोध्या के एक मन्दिर का पुजारी 87 वर्षीय मुसलमान है। दलील दी जाती है कि मन्दिर-मस्जिद की साझी दीवार बनाकर हिन्दू-मुसलमान एकता की नींव सुदृढ़ की जाए। किन्तु इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जाता कि यह प्रयोग केवल हिन्दुओं की छाती पर ही क्यों किया जाना चाहिए? केवल मन्दिर तोड़कर ही मस्जिद क्यों बनानी चाहिए? केवल मन्दिर की दीवार ही क्यों साझी होनी चाहिए? केवल भारत के मान बिन्दुओं का मर्दन करके यह कार्य क्यों किया जाना चाहिए? किसी नये स्थान पर यह नया प्रयोग क्यों नहीं किया जाता कि मन्दिर-मस्जिद की दीवारें साझी हों और मन्दिर में कीर्तन तथा मस्जिद में अजान का समय एक ही हो? अयोध्या में एक मन्दिर का मालिक किसी मुसलमान को बना देने का विरोध किसी हिन्दू ने नहीं किया, क्या कोई मुसलमान या मुस्लिम वक्फ बोर्ड किसी हिन्दू को कोई मस्जिद या ईदगाह सौंपने को तैयार है? क्या साझा मन्दिर, मस्जिद, चर्च बनाकर एक ही समय और साथ-साथ उपासना का प्रस्ताव या सुझाव मुसलमानों और ईसाईयों की ओर से आया है?

(क्रमशः)

किन्तु हिन्दू! हिन्दू यह सब नहीं करता। वह केवल हिन्दुस्तानी है, केवल भारतीय है। हिन्दुओं को भाषा, क्षेत्र और राज्य रचना के नाम पर बाँटने के समस्त प्रयासों और राजनीतिक स्वार्थों के बाद भी उनकी राष्ट्रीय एकात्मता और सांस्कृतिक समग्रता अक्षुण्य ही रही। विभिन्न राष्ट्रीयताओं के अनर्गल प्रलापों के बावजूद कन्याकुमारी से कश्मीर तक वो एक ही राष्ट्र और एक ही भारतमाता का दर्शन करता है।

सुजानगढ़ में श्रीमद् भागवत महापुराण की रसवर्षा

सुजानगढ़ (राजस्थान)

विगत 26 मार्च से 1 अप्रैल तक सुजानगढ़ के एन. के.लोहिया स्टेडियम में श्रीमद् भागवत महापुराण महोत्सव का आयोजन सम्पन्न हुआ। सात दिनों तक व्यासपीठ पर विराजमान होकर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने हजारों धर्मालु श्रोताओं को अपनी पावन वाणी द्वारा श्रीमद् भागवत कथा से रसाप्लावित किया। इसके पूर्व 26 मार्च को अग्रसेन भवन, स्टेशन रोड से कथा स्थल तक एक नयनाभिराम कलश यात्रा निकाली गई। कथा में प्रभु की विभिन्न लीलाओं का सजीव मंचन भी किया गया। श्री भगवती प्रसाद जैसनसरिया, श्री अमन कुमार जैसनसरिया एवं श्री अमित कुमार जैसनसरिया इस कथा के आयोजक एवं मुख्य यजमान थे। साध्वी सत्यप्रिया जी ने आयोजन के सुन्दर संयोजन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चौरासी लाख के चक्कर से मुक्त होने का अवसर है मनुष्य जीवन

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

सुजानगढ़ के इस पवित्र प्रांगण में विराजमान हमारे परम आदरणीय, परम भागवत श्री भगवती प्रसाद जयसनसरिया के सत्संकल्प से आयोजित श्रीमद् भागवत महापुराण की सन्निद्धी में बैठने का अवसर मिला है। इसके लिए मैं जयसनसरिया परिवार को साधुवाद प्रदान करती हूँ।

कभी-कभी हमें लगता है कि बहुत दिनों का अंधेरा है। युगों-युगों का अंधेरा है। कब मिटेगा ये? क्या इसे मिटाने के लिए युगों-युगों की प्रतीक्षा करनी होगी? इस अंधेरे को दूर भगाने के लिए कई जन्म लगेंगे क्या? नहीं। बस प्रकाश की एक किरण ही उस युगों के अंधेरे को नष्ट कर देती है। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि अंधेरे की अपनी कोई सत्ता होती ही नहीं। अंधेरा तो केवल प्रकाश के अभाव का नाम है। आज आपने भी इस पवित्र प्रांगण में अपनी भक्ति का दीपक प्रज्ज्वलित किया है तो निःसन्देह अज्ञानता का अंधेरा दूर होगा। मैं यहाँ विराजमान सभी भक्तों को बहुत-बहुत आशीर्वाद प्रदान करती हूँ। मैं विचार कर रही थी कि हम यहाँ बैठे हैं। किसी व्यक्ति को सुजान बनने में लंबा समय लगता है लेकिन आप तो सुजान के गढ़ में ही रहते हो। इसका मतलब है कि आप सुजान होकर सत्य को जानते हो। ये एक जिम्मेदारी है। जैसे कोई अयोध्या जाए तो उसके हृदय में श्रीराम विराजमान होने चाहिए। तब तो फिर वहाँ जाने का कोई अर्थ हुआ। यदि कोई वृन्दावन में निवास करता है तो फिर उसकी ये जिम्मेदारी बनती है कि उसके हृदय में भी वृन्दावन का वास होना चाहिए। कोई जयपुर में रहते हुए भी पराजित सा रहे, तो क्या बात बनेगी? कोई उनसे पूछे कि भाई किससे हारे हुए हो? तो वो कहेंगे कि नहीं जी, हमें किसी ने नहीं हराया। हम तो अपने ही मन से हारे हुए हैं।' क्या ऐसा कहने से बात बनेगी? इसी प्रकार हम मानव शरीर के गढ़ में बैठे हुए हैं। मतलब इस काया रूपी किले के भीतर हम रहते हैं। मनुष्य की काया मिलना कोई साधारण बात नहीं है बंधु-भगिनियों! ये असाधारण है। चौरासी लाख योनियों की बातें होती हैं। मनुष्य के अलावा कैसे-कैसे प्राणी!

कैसा-कैसा उनका रंग और रूप! कैसी-कैसी उनकी दिनचर्या! अचंभित कर देता है उनका दर्शन। चौरासी लाख योनियों की एक बहुत लम्बी यात्रा करके हम इस मानव शरीर में आए हैं। तो फिर हमें पशुओं जैसा जीवन तो नहीं जीना चाहिए ना? हमें मनुष्य होकर जीना होगा। तो फिर मनुष्य होने की विधा क्या है? फिर मनुष्य होने की कला क्या है? फिर मनुष्य होने की संजीवनी क्या है? मनुष्य बनकर साधना करना क्या है और फिर उस साधना की सिद्धि का प्रतिफल क्या है? ये सब जानने के लिए श्रीमद् भागवत महापुराण की शरण लेनी होगी। यदि हम अपने धर्मग्रंथों की शरण में जाते हैं। अपने सद्गुरुओं की शरणागति चाहते हैं तो फिर इसका अर्थ है कि हम सच्चे अर्थों में मनुष्य हो जाने की इच्छा लिए हुए हैं, जिस उद्देश्य के लिए परमात्म्य सत्ता ने हमें ये मानव शरीर दिया है, हम उसे प्राप्त करना चाहते हैं। मनुष्य होकर हम परमानन्द को प्राप्त करें और फिर उसे अपने चारों ओर के समाज में बाँटें, यही है मानव जीवन का उद्देश्य।

पशु-पक्षियों को जब भूख लगती है तो वो भोजन की तलाश में निकलते हैं। उसके लिए भारी जद्दोजहद होती है। सुबह से शाम तक बस यही काम। चोगा चुगना। स्वयं भी खाना और अपने बच्चों को भी पेट भरना। ये हम जानते हैं कि पशु-पक्षियों की योनि में ये होता है। जब चिड़िया को अण्डे देने होते हैं तो वो पहले एक-एक तिनका जोड़कर घोंसला बनाती है। फिर अण्डे देने और उन्हें सेने की तपस्या। बतख चौदह दिनों तक अपने अण्डों के ऊपर से उठकर कहीं नहीं जाती। वो उन्हीं पर बैठी रहती है। अपने गुरुदेव की सिजई स्थित गौशाला में इस दृश्य को चौदह दिनों तक तो मैंने स्वयं देखा आगे पता नहीं वो कितने दिन और बैठी रही। उसके शरीर के ताप से ऊष्मा पाकर उन अण्डों से संतानों का जन्म हो जाए, इसके लिए कितनी कठिन तपस्या! ये सब पशु-पक्षियों में होता है। लेकिन यदि हम मनुष्य होकर भी केवल रोटी, कपड़ा और मकान की व्यवस्था में ही लगे हुए हैं तो फिर मनुष्य जीवन की महिमा क्या है? यदि आप सुन्दर हो तो सुन्दरता तो पशु-पक्षियों की भी अनुपम है। नहीं तो आपको गजगामिनी या मृगनयनी जैसी उपाधियों से नहीं पुकारा जाता। बच्चों को जन्म देकर उनके पालन-पोषण की कर्तव्यपरायणता तो अन्य योनियों में भी है। फिर मनुष्य योनि में ऐसा क्या अलग है, जो हमें अन्य जीवों से अलग करता है?

मनुष्य होने की केवल यही विशेषता है कि हम मनुष्य योनि में आए हैं तो यही अवसर है जनम और मरण के चक्करों से मुक्त हो जाने का। श्रीरामचरितमानस में भी तुलसी बाबा ने कहा है कि :

बड़े भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रथिन्ह गावा।।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा। पाई न जेहि परलोक सँवारा।।

आप देखिये कि जन्म और मृत्यु दोनों में ही रुदन है। जन्म के समय जन्म देने वाली और जन्म लेने वाले, दोनों ही रोते हैं। माँ तो प्रसव पीड़ा के कारण रोती है लेकिन नवजात भी तो रोता है। वो क्यों रोता है? उसे तो गर्भ रूपी काल कोठरी से मुक्ति मिल रही है लेकिन कुछ तो ऐसा होगा, जिसके कारण वो रोता होगा। कहीं न कहीं उसे ये बोध होता होगा कि जिस संसार से मुक्त हुआ था, अब दोबारा उसी चक्कर में पड़ रहा हूँ। तो उस अबोध सन्तान का रुदन एक प्रकार से कुछ न कुछ संकेत देता है। अब मनुष्य देह मिला है तो फिर ये जन्म और मृत्यु से मुक्ति का अवसर है। इसके लिए हमें किसी शरण में जाना है? जहाँ हमें मुक्ति मिल जाए। श्रीमद् भागवत महापुराण की सन्निद्धी और उसका अनुसरण हमें जीवन के उस मार्ग पर प्रशस्त करते हैं, जो हमें चौरासी लाख योनियों के आवागमन से मुक्त करके परमपद प्रदान करते हैं।

श्रीमद् भागवत महापुराण कथा महोत्सव, सुजानगढ़ की झलकियाँ

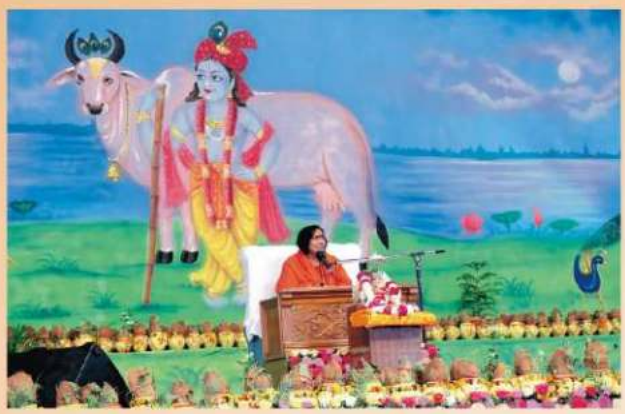

कथा महोत्सव के मुख्य यजमान श्री भगवती प्रसाद जैसनसरिया सपरिवार व्यासपीठ का पूजन करते हुए

जौहर की ज्वाला आज भी हमारे चेहरों की रौनक बढ़ाती है

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

मेवाड़ की इस पावन धरा पर आकर केवल हमारा शरीर ही नहीं बल्कि हमारी चेतना, बुद्धि और मन भी तृप्त हुए हैं। सदियों पूर्व जिस बलिदानी परम्परा ने विधर्मियों से संघर्ष करते हुए जिस प्रकार से भारत के गौरव और स्वाभिमान की रक्षा की, ये धरा उसकी साक्षी है। मान, सम्मान और स्वाभिमान जीवन के इतने महत्वपूर्ण बिन्दु हैं कि जिनकी रक्षा करने के लिए शरीरों तक के ऐसे होम कर दिए जाते हैं जैसे हवन कुंड में समिधा अर्पित की जाती हो। ऐसे ही मेवाड़ की इसी पावन धरा पर भारत की मातृशक्ति ने जौहर रचाकर जिस प्रकार से अपनी आन की रक्षा की थी उसकी सुगंध आज भी यहाँ महकती है। उनके बलिदानों के ही परिणामस्वरूप आज देश में कोटि-कोटि हिन्दू समाज दिखाई देता है। मेवाड़ की उसी परम्परा से उठी महान जौहर की ज्वाला, आज भी हमारे चेहरों की रौनक बढ़ाती है। इस भूमि पर आकर जो अनुभव हो रहा है उसे केवल शब्दों में व्यक्त कर पाना संभव है। हिन्दुत्व की रक्षा में बलिदानी भूमिका निभाने वाले परम प्रतापी योद्धा महाराणा प्रताप के वंशज श्री लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ के सनातनी भाव को देखकर मैं अभीभूत हूँ। निश्चित रूप से उज्जवल परम्परा का ही प्रसाद है जो हमारी विचारधारा में आता है। हमें तो मेवाड़ पर गौरव होता है लेकिन लक्ष्यराज जी का तो यह रक्त है। ऐसे में ये तो और अधिक गौरवान्वित होते होंगे।मेवाड़ का इतिहास सदियों तक भारत वासियों को राष्ट्र पर मर मिटने की प्रेरणा देता रहेगा। यह भूमि त्याग बलिदान समर्पण शौर्य एवं राष्ट्रभक्ति का बीजारोपण आने वाली पीढ़ियों में भी करती रहेगी।

उदयपुर स्थित सिटी पैलेस के दरबार हाल में परमप्रतापी हिन्दू योद्धा महाराणा प्रताप के वंशज डॉ.लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी का अभिनन्दन करते हुए

दीदी माँ का आगमन हमारा सौभाग्य है

- डॉ.लक्ष्यराज सिंह मेवाड़
(उदयपुर)

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी का सिटी पैलेस में आगमन हमारे लिए सौभाग्य की बात है। आज निश्चित रूप से शब्दों की कमी महसूस हो रही है लेकिन खुशी इस बात की है कि विगत पन्द्रह सौ वर्षों से हमारा मेवाड़ सन्त एवं साध्वियों के यथोचित् आदर सत्कार की परम्परा का निर्वहन करता आया है। आज हमें जो सौभाग्य मिला है इसके लिए मैं दीदी माँ जी के प्रति कृतज्ञ हूँ। मेवाड़ इस गुरु-शिष्य परम्परा को भी बतौर स्वाभिमान मानते हुए इस परम्परा का निर्वहन कर गर्व महसूस करता है। यहाँ की यह पावन परम्परा इक्कीसवीं सदी में भी जीवन्त होती दिख रही है जिससे हम प्रसन्न हैं और उम्मीद करते हैं कि इससे प्रेरणा लेकर ज्यादा से ज्यादा युवा अपनी संस्कृति के प्रति प्रेरित होंगे।

उदयपुर (राजस्थान)

प्रखर आध्यात्मिक शक्ति पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के चार दिवसीय उदयपुर प्रवास पर उनके उदयपुर आगमन पर वात्सल्य सेवा समिति, उदयपुर के श्री प्रकाश अग्रवाल, श्री राजेश अग्रवाल, श्री दिनेश भट्ट, श्री पारस सिंघवी एवं डॉ जिनेंद्र शास्त्री के नेतृत्व में नगर के गणमान्यजनों ने उनकी भावपूर्ण अगवानी की।

महान हिन्दू योद्धा महाराणा प्रताप के वंशज डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने 11 अप्रैल को अपने निवास ऐतिहासिक सिटी पैलेस के दरबार हाल में उनका भव्य स्वागत किया। उन्होंने विद्वजनों द्वारा उच्चारित वेदमंत्रों के बीच सनातनी परंपरा अनुसार उनका पूजन एवं अभिनंदन किया। इसी दिन पूज्या दीदी माँ जी ने श्री गुणेन्द्र मेड़तिया, श्री पवन शर्मा, श्री परमेश्वर अग्रवाल के निवास को अपनी चरण रज से धन्य किया। 12 अप्रेल को रूपाजी की बावड़ी, ग्रीन पार्क स्थित डॉ.जिनेन्द्र शास्त्री के निवास पर आयोजित कार्यक्रम में आपने उपस्थित गणमान्यजनों को अपना आशीवर्चन प्रदान किया। इसी दिन श्री प्रमोद सामर एवं श्री शशि खेतान के निवास पर परिजनों को आपने अपना पावन सानिध्य प्रदान किया। एक अन्य कार्यक्रम में उदयपुर प्रेस के मीडियाकर्मियों से बातचीत करते हुए आपने देश और धर्म से जुड़े अनेक प्रश्नों के विस्तारपूर्वक उत्तर दिए। 13 अप्रैल को उदयपुर के कई कार्यक्रमों में सम्मिलित होने के बाद 14 अप्रैल को दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने प्रस्थान किया। इस अवसर पर वात्सल्य सेवा समिति, उदयपुर एवं नगर के गणमान्यजनों ने उन्हें भावपूर्ण विदाई दी।

सिटी पैलेस के दरबार हाल में पूज्या दीदी माँ जी एवं डॉ.लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ के साथ साध्वी सत्यप्रिया जी एवं वात्सल्य सेवा समिति, उदयपुर तथा नगर के गणमान्यजन

हृदय की उमंग सभी समस्याओं का समाधान होती है

अपने उदयपुर प्रवास के दौरान 12 अप्रैल को डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री के ग्रीन पार्क स्थित निवास पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्यजनों को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने कहा कि -'जीवन में किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मन में उमंग का होना बहुत आवश्यक है। जैसी उमंग हम डॉ.जिनेन्द्र जी के भीतर देखते हैं। यदि हमारा हृदय उत्साह से भरा हो तो फिर प्रत्येक समस्या का समाधान निकल आता है। जिंदगी की तमाम समस्याओं का सामना यदि आप तनाव या क्रोध के साथ करेंगे तो ये और भी बड़ी होती जाएंगी लेकिन यदि आपने इनका सामना मुस्कुराकर किया तो फिर ये छोटी होते-होते एक दिन समाप्त ही हो जाएंगी। इसीलिए हमारी सन्त परम्परा कहती है कि समस्या बड़ी नहीं बल्कि समाधान बड़ा होना चाहिए। प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच भी धैर्य बनाकर रखना बहुत जरूरी होता है। भारत की पवित्र भूमि पर ऐसी महान विदुषियों का जन्म हुआ जिन्होंने अपनी सन्तानों को लोरी में 'आत्मज्ञान' सुनाया। यदि स्त्री संतुलित रहती है तो फिर वो संतुलित संतानों को जन्म भी देती है। हीन भावना से ग्रसित स्त्री आत्महीन संतानों की माँ बनती है। तो भारत के स्वाभिमान की प्रतिष्ठा जैसे मेवाड़ की मातृशक्ति ने की है, वो उनके आत्मसंतुलन का परिचायक है। भारत की ऐसी ही जीवट मातृशक्ति का दर्शन वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में निर्माणाधीन 'श्री सर्वमंगला पीठम्' में होगा, जिसका निर्माण आप सबके सहयोग से हम कर रहे हैं। यहाँ चारों युगों में स्त्री की स्वर्णिम भूमिका का दर्शन होगा।'

इस अवसर पर दीदी माँ जी ने श्वेत कपोत उड़ाकर 'वसुधैव कुटुम्बकं' कार्यक्रम का शुभारंभ किया। 'शुद्धम् ग्रुप' की डायरेक्टर डॉ.सीमा जैन ने माला, उपरणा, पगड़ी पहनाकर तथा मुख्य अतिथि उदयपुर राजघराने की निवृत्ति कुमारी मेवाड़ ने शाल ओढ़ाकर दीदी माँ जी का अभिनन्दन किया। विशिष्ट अतिथि श्री ओ.पी.बुनकर (ए.डी.एम.), श्री प्रकाश अग्रवाल, श्री दिनेश भट्ट, श्री ताराचंद जैन, डॉ. अलका मूंदड़ा तथा श्री शांतिलाल वेलावत रहे।

भारत स्वाभाविक रुप से हिन्दू राष्ट्र है

उदयपुर (राजस्थान)

अपने उदयपुर प्रवास पर स्थानीय मीडियाकर्मियों से बातचीत करते हुए दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा को लेकर किये गए प्रश्नों पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि -'हमारा देश स्वाभाविक रूप से हिन्दू राष्ट्र है। सबसे पहले यह समझना होगा कि हिन्दू का अर्थ सबको अपने भीतर समाहित कर लेने वाली विचारधारा है। हम तो सारे विश्व को अपना कुटुम्ब मानने वाले लोग हैं। लेकिन दुर्भाग्य से हमारी इस उदारता को कायरता समझ लिया गया। इसके विरोध में अब हिन्दू समाज मुखर होकर अपनी बात करने लगा है, इसीलिए कई लोगों को तकलीफ हो रही है। सनातनधर्मी सभी के हितों की चिंता करते हैं और यह उनका स्वाभाविक गुण भी है लेकिन उनकी आस्था का उपहास उड़ाया जाए, इसके लिए वे तैयार नहीं है। अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर को लेकर विगत पाँच सौ वर्षों तक एक लम्बा आंदोलन चला। अपने आस्थाकेन्द्र पर अपना स्वाभाविक अधिकार प्राप्त करने के लिए हमारे पूर्वजों ने असंख्य बलिदान दिए। इस संघर्ष में कई राजनैतिक बाधाएँ भी आईं परन्तु संघर्ष निरन्तर चलता रहा और अन्ततः एक पारदर्शी न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर निर्णय हुआ और अब जन-जन के आराध्य भगवान श्री राम का भव्य मंदिर बन रहा है। हमें विश्वास है कि ठीक इसी प्रकार काशी विश्वनाथ मन्दिर तथा श्रीकृष्ण जन्मस्थान, मथुरा के विवादित स्थलों पर भी एक दिन हिन्दू समाज को अपना स्वाभाविक और कानूनी अधिकार प्राप्त होगा।

पूज्या दीदी माँ जी के उदयपुर प्रवास की झलकियाँ

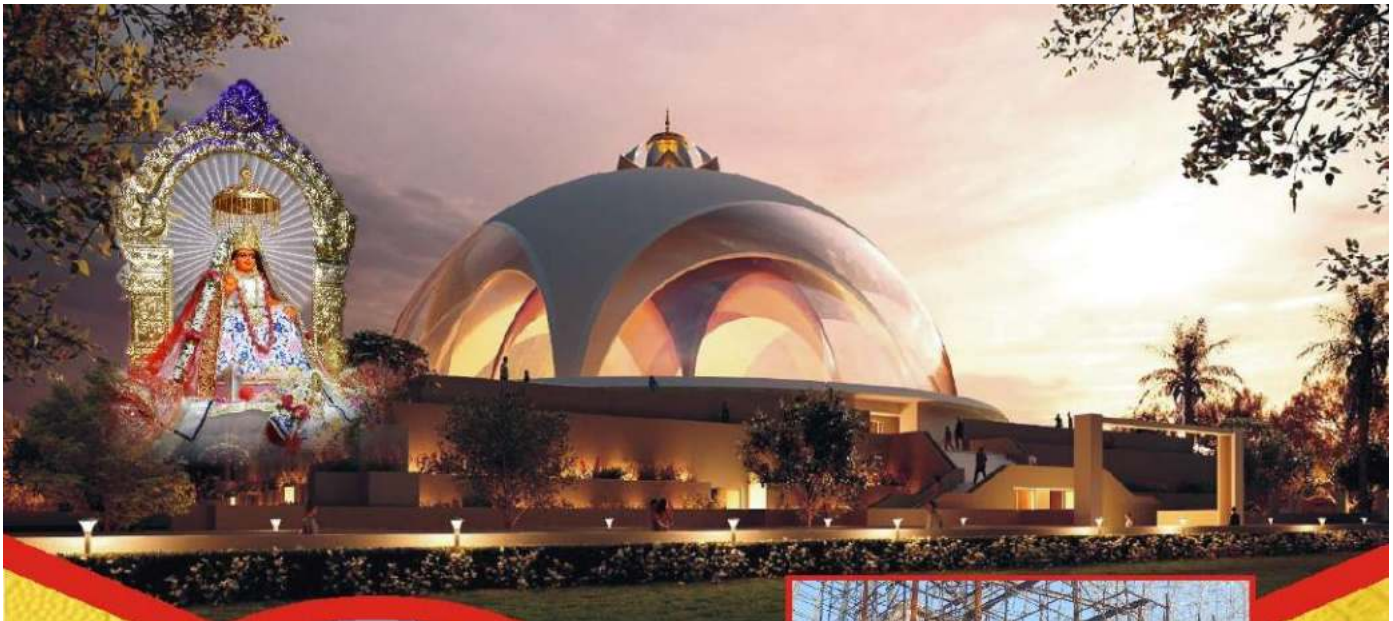

वात्सल्य ग्राम वृन्दावन में निर्माणाधीन

श्री सर्वमंगला पीठम्

विशेषताएँ :

- लगभग डेढ़ लाख वर्गफीट क्षेत्रफल में विस्तारित एवं एक सौ चौदह फीट की ऊँचाई लिए हुए श्री सर्वमंगला पीठम् शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय होगा।
- रज, तम और सत्व गुणों को प्रदर्शित करती इसकी तीन पारदर्शी छतें मध्य से बिना किसी सहारे के निर्मित होंगी।
- इन विशाल छतों के ठीक नीचे माँ सर्वमंगला अपने सृजनात्मक, कल्याणक, वात्सल्यमयी तथा माधुर्य रूप में विराजेंगी।
- पीठम् की तल मंजिल पर एक अत्याधुनिक प्रदर्शनी होगी, जिसके माध्यम से सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में भारतीय नारी की भूमिका के सुनहरे अध्यायों को दर्शाया जाएगा। प्रथम मंजिल पर माँ सर्वमंगला माता के चारों ओर चलित परिक्रमा पथ होगा।
- मन्दिर के चारों ओर स्टेडियमनुमा सीढ़ियों का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ बैठकर श्रद्धालुगण माता का मनोहारी दर्शन कर सकेंगे। मन्दिर भवन के चारों ओर नयना भिराम बाग–बगीचे भी होंगे, जिनमें बैठकर श्रद्धालुओं को अनुपम शान्ति का अनुभव होगा।

₹1100 श्री सर्वमंगला पीठम् के निर्माण में

एक ईंट हेतु मात्र 1100/– का सहयोग समर्पित कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

आप अपनी सहयोग राशि का चेक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट 'परमशक्ति पीठ' के नाम से सम्पूर्ण भारत में किसी भी शाखा से जमा करवा सकते हैं।

5,00,000/- (पाँच लाख रुपयों) की सहयोग राशि समर्पित कर 'माँ सर्वमंगला न्यास' के न्यासी बनने हेतु सम्पर्क करें – 011-22238751, 22238757

बैंक का नाम : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
खाते का नाम : परमशक्ति पीठ
खाता संख्या : 520101244630425

IFS Code : UBIN0905321
MICR : 110026344
शाखा : सी–50, प्रीत विहार, दिल्ली

कन्यादान

आह्वान

सौभाग्यशाली होते हैं वो वर और वधु जो सन्त शक्तियों के आशीर्वादों की छत्रछाया में दाम्पत्य जीवन की डोर से बँधते हैं। परमपिता परमेश्वर की इसी असीम अनुकम्पा की पात्र बन रही हैं, वात्सल्य परिवार की बेटियाँ। उनको आध्यात्मिक शक्तियों के सानिध्य में समाज के प्रतिष्ठित परिवारों की बहू बनते देखना अतीव आनन्द के क्षण होते हैं। परमशक्ति पीठ के माध्यम से हम उनके घर बसाने की पुण्य कार्य में संलग्न हैं। आप भी इस कार्य में उनके कन्यादान के सहभागी बनकर सामाजिक योगदान प्रदान कर सकते हैं।

सहयोग हेतु सम्पर्क करें
परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, नई दिल्ली –110092
दूरभाष : 9999971714, 9999971716

आप अपना सहयोग सीधे बैंक में भी जमा करा सकते हैं, जिसके लिए हमारे खाते की विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है :

A/c Name : Param Shakti Peeth A/c Kanyadan
A/c No. : 6023000100098186
IFSC Code : PUNB0602300
Branch Name : Mandawali, Delhi

विटामिन बी 12
की कमी को अनदेखा न करें

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए विटामिन बहुत जरूरी हैं। इनका असंतुलित होना मलतब शरीर में रोगों का आना। हमारे शरीर को सुचारू रूप से काम करने के लिए प्रोटीन, खनिज और विटामिन की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। इसके लिए जरूरी विटामिंस में से एक है विटामिन 'बी'। विटामिन बी आठ प्रकार के होते हैं। ये सभी हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी हैं। विटामिन बी12 हमारे सर्कुलेटरी सिस्टम और नर्वस सिस्टम को स्वस्थ रखने में मदद करता है। आप कई तरह के खाद्य पदार्थों से विटामिन बी12 की कमी को पूरा कर सकते हैं। आईये जानते हैं कि इसकी कमी होने पर शरीर में क्या लक्षण दिखते हैं और कौन से प्राकृतिक स्रोत से इसकी कमी को पूरा किया जा सकता है।

विटामिन बी-12 की कमी पर शरीर में दिखाई देने वाले लक्षण

- तेजी से वजन कम होना
- मांसपेशियों का कमजोर होना
- त्वचा का रंग पीला पड़ना
- एनीमिया यानि रक्तल्पता होना
- मानसिक भ्रम या स्मरण शक्ति का कमजोर होना
- जीभ में दाने या फिर लाल हो जाना
- मुंह में छाले की समस्या
- आँखों की रोशनी कम होना
- डिप्रेशन, कमजोरी और सुस्ती
- सांस फूलना
- सिरदर्द और कान बजना
- भूख कम लगना

विटामिन बी के प्राकृतिक स्रोत :

दही

विटामिन बी1, बी2 और बी12 दही में पाया जाता है। आप अपने रोजाना के भोजन में लो फैट दही जरूर शामिल करें। इससे शरीर को जरूरी पोषण मिलता है।

दूध

विटामिन बी12 की कमी को पूरा करने के लिए आप अपनी डाइट में दूध जरूर शामिल करें। इसमें काफी मात्रा में विटामिन बी12 पाया जाता है। शाकाहारी लोगों के लिए ये एक अच्छा ऑप्शन है।

ओटमील

अपने नाश्ते में ओट्स खाने से आपके शरीर को भरपूर फाइबर और विटामिन्स मिलते हैं। ओट्स में विटामिन बी12 काफी मात्रा में होता है, जिससे आप हेल्दी रहते हैं।

सोयाबीन

सोयाबीन में विटामिन बी12 प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। आप सोया मिल्क, टोफू या सोयाबीन की सब्जी खा सकते हैं।

पनीर

पनीर में विटामिन बी 12 सबसे ज्यादा होता है। इसके अलावा कॉटेज चीज में भी विटामिन बी पाया जाता है। पनीर आपके स्वास्थ को बेहतरीन है।

ब्रोकली

आप अपनी डाइट में ब्रोकली शामिल कर सकते हैं। इसमें विटामिन बी 12 के साथ फोलेट भी होता है, जो शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी नहीं होने देता है।

खमीर

खमीर में भी विटामिन बी 12 भरपूर मात्रा में पाया जाता है। खमीर के प्रयोग से निर्मित जलेबी जैसे खाद्य पदार्थों का सेवन करके आप अपने शरीर में विटामिन बी 12 की कमी को दूर कर सकते हैं।

यदि आपकी अनदेखी के कारण शरीर में विटामिन बी १२ का स्तर चिकित्सा मानकों से नीचे चले जाने की संभावना लगती हो तो तत्काल लैब जाँच करवाकर किसी चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए। उनके परामर्श अनुसार न्यूरोबियॉन इंजेक्शन लगवाकर इसकी रिकवरी तेजी से की जा सकती है।

स्वामी परमानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय, योग एवं अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

आयुर्वेद,
प्राकृतिक चिकित्सा एवं
योग द्वारा रोग निदान

रोगी सुरक्षा एवं उपचार गुणवत्ता हेतु एन.ए.बी.एच.
(National Accreditation Board for Hospitals & Healthcare Providers)
द्वारा प्रमाणित हॉस्पिटल

सुविधाएँ

- 40,000 वर्गफीट में निर्मित विशाल हॉस्पिटल
- सुविधापूर्ण एवं सुव्यवस्थित आवासीय कक्ष
- महिलाओं एवं पुरुषों हेतु अलग-अलग चिकित्सा कक्ष
- 3000 वर्गफीट में निर्मित योगा हॉल
- 2500 वर्गफीट में निर्मित फिटनेस सेन्टर
- फिजियोथैरेपी सेन्टर
- लायब्रेरी
- अत्याधुनिक डाइनिंग हॉल
- फार्मेसी आउटलेट

पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार के चिकित्सकों द्वारा उत्कृष्ट चिकित्सा सेवाएँ, यहाँ संचालित 'पतंजलि वेलनेस सेंटर' में उपलब्ध हैं

रुम चार्जेस (7 दिनों के लिए)	
जनरल वार्ड	— 14,000/- (एक व्यक्ति हेतु)
स्टेंडर्ड रुम	— 21,000/- (एक व्यक्ति हेतु)
	— 31,000/- (दो व्यक्तियों हेतु)
डीलक्स रुम	— 38,000/- (एक व्यक्ति हेतु)
	— 56,000/- (दो व्यक्तियों हेतु)

विशेष चिकित्सा

गठिया रोग, चर्म रोग / सोरियासिस, पेट रोग, मानसिक रोग, मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, स्त्री एवं पुरुष गुप्त रोग, मोटापा, किडनी रोग, लीवर रोग, जोड़ों का दर्द एवं लकवा

- पंचकर्म, एक्यूप्रेशर, फिजियोथैरेपी एवं औषधियों का शुल्क अलग रहेगा।
- उपरोक्त रूम चार्जेस में नेचुरोपैथी, योगा एवं भोजन सम्मिलित है, जो अग्रिम रूप से देय होगा।
- संबंधित डॉक्टर के निर्देशन पर ही ट्रीटमेंट पैकेज को आगे बढ़ाया जा सकेगा।
- डॉक्टर द्वारा निश्चित उपचार की निर्धारित अवधि से पूर्व हॉस्पिटल से स्वयं ही डिस्चार्ज लेने वालों को किसी भी रूप में जमा किये गए चार्जेस का रिफण्ड नहीं किया जाएगा।
- रोगी के साथ रहने वाले व्यक्ति का शुल्क 1000 रुपये प्रतिदिन अलग से लिया जाएगा।

बुकिंग संबंधी सम्पर्क नंबर – 8287445808, 8287447197 तथा 22478881/3
भुगतान संबंधी सम्पर्क नंबर – 8287443203

नरवाना रोड, ब्लॉक-ई, पश्चिम विनोद नगर, आंबेडकर पार्क के पास, नई दिल्ली – 110092
वेबसाइट : www.sppc.in सहित facebook, youtube, instagram पर भी विजिट करें

वात्सल्य प्रकाशन की प्रस्तुतियाँ...

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन विचारों से युक्त साहित्य परमशक्ति पीठ के 'वात्सल्य प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जो आपको जीवन की अनेक समस्याओं के सरल समाधान देता है। आप भी इन पुस्तकों को पढ़कर अपना जीवन सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

वात्सल्य साहित्य

01. आत्मसुख की ओर
02. सद्गुरु - बन्धनों के मुक्तिदाता
03. योग - सफल जीवन का रहस्य
04. सार्थक जीवन के सूत्र
05. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
06. जीवन का परमानन्द
07. साधना के पथ पर
08. जागो भारत की नारी
09. सद्गुरु - जीवन की आवश्यकता
10. माँ - सृष्टि की धुरी
11. मुझे बचाओ माँ
12. परमशक्ति योग (हिन्दी)
13. परमशक्ति योग (अंग्रेजी)
14. यशोदा भाव - वात्सल्य ग्राम की मूल प्रेरणा
15. अनुभूति
16. पाथेय
17. व्यक्तित्व और विचार
18. मेरी स्मृतियों के भानु भैया
19. शुभाशीष
20. युगपुरुष की युगयात्रा
21. पिबत भागवतं रसमालयम्
22. नया सवेरा लाओ (काव्य संग्रह)
23. साधना के स्वर (भजन संग्रह)
24. भजन वर्षा (भजन संग्रह)
25. मेरी छोटी सी है नाव (भजन संग्रह)
26. वात्सल्य
27. श्रीमद्भगवद्गीता
28. निरामय प्राकृतिक चिकित्सा
29. चतुर्मुखी प्राकृतिक चिकित्सा
30. मसाले भी औषधियाँ हैं

पूज्या दीदी माँ जी के प्रवचनों की पेन ड्राईव भी उपलब्ध है

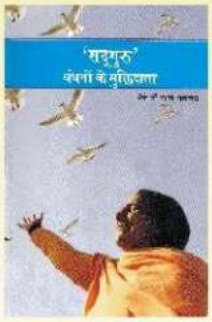

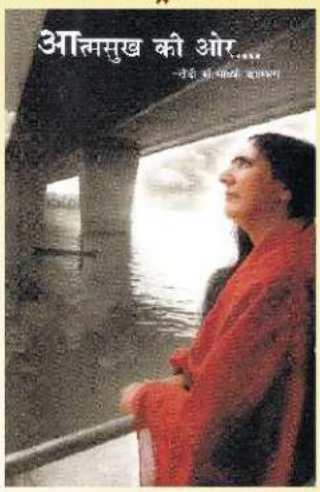

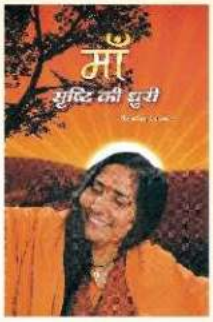

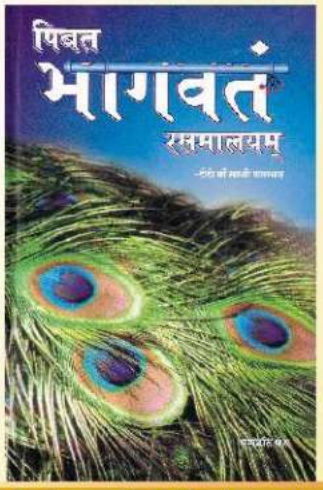

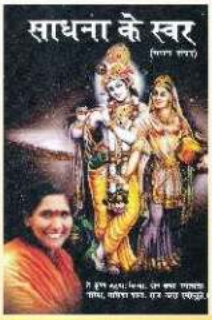

उपरोक्त साहित्य मंगवाने के लिए 'परमशक्ति पीठ' के नाम से चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट बनवाकर निम्न पते पर भेज सकते हैं। पैकिंग और डाक व्यय आपके द्वारा ही देय होगा।

केन्द्रीय कार्यालय

परमशक्ति पीठ
लव-103, अग्रसेन आवास, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, नई दिल्ली-110092 दूरभाष सम्पर्क नंबर - 011-22238751, 011-22248774
मोबाइल सम्पर्क नंबर - 8826864446
ईमेल - info@vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
पोस्ट - प्रेमनगर
वृन्दावन
जिला - मथुरा (उत्तरप्रदेश)-281003

मुण्डन संस्कार से अभिसिंचित मुक्ता

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

वात्सल्य परिवार में सुश्री सुमन जी की बिटिया है मुक्ता। विगत ९ अप्रैल को पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन सानिध्य में उसका मुण्डन संस्कार सम्पन्न हुआ। परमशक्ति पीठ के महासचिव श्री संजय भैयाजी, विख्यात उद्योगपति, समाजसेवी एवं परमशक्ति पीठ के परम सहयोगी श्री महावीर प्रसाद मानसिंगका ने इस अवसर के साक्षी बनते हुए अपना शुभाशीर्वाद मुक्ता को प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के वात्सल्य परिवारों में रहने वाले सभी बच्चों के यथायोग्य सनातनी संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं। यहाँ प्रस्तुत हैं इस अवसर की चित्रमय झलकियाँ :

परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

के विभिन्न आयामों हेतु आपके आर्थिक सहयोग का स्वागत है

परमशक्ति पीठ में आपका सहयोग

आजीवन सहयोगी	1,00,000/-
संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
कार्पोरेट सहयोगी	11,00,000/-

वत्सल निधि में आपका सहयोग

शिक्षा निधि (वार्षिक)	6000/-
वत्सल निधि (एक सुविधा) वार्षिक	24,000/-
वत्सल निधि (शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, होस्टल, अन्य) वार्षिक	1,20,000/-
बच्चों का एक समय का भोजन	21,000/-

वैशिष्ट्यम् स्कूल (दिव्यांग बच्चों हेतु) में आपका सहयोग

दिव्यांग बच्चों की समुचित देखभाल हेतु (वार्षिक)	1,50,000/-

चिकित्सा सेवाओं में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों हेतु (एक रोगी के ऑपरेशन हेतु)	3000/-
ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों हेतु (प्रति शिविर)	51,000/-

श्री सर्वमंगला पीठम् में आपका सहयोग

संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
एक शिला सहयोगी	1100/-

गौ सेवा में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की 'कामधेनु गौगृह गौशाला' हेतु

प्रति गौमाता सहयोग (मासिक)	3100/-
प्रति गौमाता सहयोग (वार्षिक)	36,000/-
गौवंश हेतु भूसा सहयोग (दैनिक)	11,000/-
गौवंश हेतु हरा चारा सहयोग (दैनिक)	5100/-
गौ दान राशि	50,000/-

वात्सल्य ग्राम के साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद

परमशक्ति पीठ के सेवाकार्यों में आप अपना सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं :

बैंक खातों में सीधे जमा करने के लिए जानकारियाँ :

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक
खाता कमांक : 1518000101014134
आई.एफ.एस.सी. कोड : PUNB0151800

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
खाता कमांक : 10137296689
आई.एफ.एस.सी.कोड : SBIN0007085

दान के लिए ऑनलाइन लिंक :
https://www.vatsalyagram.org/donate
दान के लिए पेटीएम नंबर :
88268 88001

चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भी दान राशि परमशक्ति पीठ कार्यालय में भेजी जा सकती है।

दान के लिए कृपया इस क्यू.आर.कोड को स्कैन करें

प्रधान कार्यालय का पता :

परमशक्ति पीठ

लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, दिल्ली –110092
सम्पर्क सूत्र : +91-11-222-387-51, 9999971714, 9999971716
ईमेल : donorcare@vatsalyagram.org **वेबसाइट** : www.vatsalyagram.org

आपका सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

योगदान प्रपत्र

जी हाँ, मैं वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों में अपना योगदान देना चाहता हूँ / चाहती हूँ।
मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है।

श्री/श्रीमती/कुमारी _____
व्यवसाय _____
पता _____
_____ पिनकोड _____
सम्पर्क फोन नंबर _____
ईमेल आई.डी. _____
दान राशि (अंकों में) _____ (शब्दों में) _____

वात्सल्य निर्झर पत्रिका की विज्ञापन दरें

परमपूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन मार्गदर्शन में संचालित संस्था 'परमशक्ति पीठ' के अन्तर्गत वात्सल्य ग्राम, वृंदावन जैसे कई सेवा प्रकल्प राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे रहे हैं। 'वात्सल्य निर्झर' संस्था की मासिक पत्रिका है जिसके माध्यम से संस्था संबंधी गतिविधियों की विस्तृत जानकारी पाठकों तक पहुँचती है एवं दीदी माँ जी के प्रेरक आलेखों सहित विविध स्तंभ उनका मार्गदर्शन करते हैं। यह पत्रिका भारत सहित विश्व भर में कई पाठकों तक पहुँचाई जाती है। 'वात्सल्य निर्झर' के प्रत्येक अंक में आप अपने व्यापार-व्यवसाय का विज्ञापन देकर उसे पाठकों तक पहुँचा सकते हैं। इसकी विज्ञापन दरों का विवरण इस प्रकार है :

विज्ञापनकर्ता अपना कोई भी विशिष्ट निर्देश 'परमशक्ति पीठ' के नाम से देय ड्राफ्ट अथवा चेक के साथ संलग्न करके भेज सकते हैं।

• पिछला पृष्ठ (Back Cover)	**30,000** (रंगीन)
• भीतरी पृष्ठ अगला (Front inside)	**25,000** (रंगीन)
• भीतरी पृष्ठ पिछला (Back Inside)	**25,000** (रंगीन)
• अन्य भीतरी पृष्ठ	**20,000** (रंगीन)
• अर्ध पृष्ठ	**10,000** (रंगीन)

Donation Form

Yes, I want to contribute for Vatsalya Gram. My personal details are :

Mr./Mrs/Ms :.....
Occupation :.....
Address :.....
Pin Code :.....
Phone No. :..... Mobile No. :.....
email :.....
Donation Amount (In digits) :.....(In words) .....

Thanks for join hands with Vatsalya Gram

You can dontate your donation directly in following banks :

Bank name : Pujab National Bank	Bank name : State Bank Of India
A/c. No. : 1518000101014134	A/c. No. : 10137296689
IFSC Code : PUNB0151800	IFSC Code : SBIN0007085

Link for online donation : https://www.vatsalyagram.org/donate

Paytm Mobile Number of Donation : 88268 88001

चिदानन्द रुपः शिवोहम् शिवोहम्

नर्मदा के तट पर ओंकारेश्वर की गुफा में एक तपस्यारत वृद्ध संन्यासी की अवस्था ऐसी नहीं थी कि वो यात्राएँ कर सकें लेकिन उनका प्रभाव ऐसा था कि जंगली हिंसक पशु गुफा के समीप आते ही शान्त हो जाते थे। संन्यासी का सारा समय ध्यान में गुजरता, उन्हें प्रतीक्षा थी ऐसे किसी सुयोग्य व्यक्ति की जिसे वे अपना परम्परागत ज्ञान सौंपकर संसार से विदा लेते। प्रतीक्षा लंबी होती जा रही थी किन्तु विश्वास दृढ़ था।

एक दिन नर्मदा नदी में बाढ़ आ गई। उसका उफान देखकर किसी की हिम्मत नहीं हुई कि वो उसके समीप जा सके। भयंकर ध्वनि के साथ नर्मदा की प्रत्येक लहर हर तट को तोड़ती जा रही थी। तभी माथे पर त्रिपुंड, शरीर में यज्ञोपवित, शीश पर गोखुरी शिखा, गले में रुद्राक्ष माला धारण किए हुए एक भगवाधारी बालक नर्मदा के समीप आकर खड़ा हो गया। मुख पर सूर्य का तेज लिए वो बालक हाथ में एक कमण्डल लिए हुए था। उसने शान्त चित्त से नर्मदा को देखकर अनुमान लगा लिया था कि अभी नदी को पार नहीं किया जा सकता परन्तु वो वहाँ ज्यादा रुकना भी नहीं चाहता था। उस ब्रह्मचारी ने माँ नर्मदा को प्रणाम करते हुए स्तुति की :

सबिंदु सिन्धु सुस्खल तरंग भंग रंजितम
द्विषस्तु पाप जात जात कारि वारि संयुतम
कृतान्त दूत काल भूत भीति हारि वर्मदे
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे

यह नर्मदाष्टक सम्पूर्ण होते ही आश्चर्यजनक घटना घटी। तटबंधों को तोड़ रही नर्मदा उस तेजस्वी बालक के कमण्डल में समा गई। इधर नदी के दूसरे छोर पर जंगल में स्थित गुफा में समाधिस्थ संन्यासी के नेत्र खुल गए। वो जान गया कि आज उनकी प्रतीक्षा समाप्त हुई। तभी वो तेजस्वी बालक उनके सम्मुख आकर खड़ा हो गया। दोनों ने एक दूसरे को देखा, ब्रह्मचारी ने संन्यासी को प्रणाम किया तो संन्यासी ने परम्परा के निर्वहन हेतु उसे प्रत्यक्ष तो उसे आशीर्वाद दिया, किन्तु मन ही मन प्रणाम किया। सब कुछ जानते हुए भी लोकाचार की मर्यादा रखते हुए संन्यासी ने पूछा -'कौन हो तुम? अपना परिचय दो।'

मात्र आठ वर्ष आयु के उस बाल ब्रह्मचारी ने कहा :

मनोबुध्दय अहंकार चित्तानि नाहं
न चं श्रोत्र जिव्हे न च घ्राण नेत्रे
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः
चिदानन्दरुपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्

अर्थात्

मैं न तो मन हूँ, न बुद्धि, न अहंकार, न ही चित्त हूँ
मैं न तो कान हूँ, न जीभ, न नासिका, न ही नेत्र हूँ
मैं न तो आकाश हूँ, न धरती, न अग्नि, न ही वायु हूँ,
मैं तो मात्र शुद्ध चेतना हूँ, अनादि, अनन्त हूँ, अमर हूँ

निर्वाणक्ष षट्क्रम के रूप में ब्रह्मचारी ने जो परिचय दिया, उसे सुनकर वयोवृद्ध संन्यासी के नेत्र सजल हो उठे। उन्होंने अपने आसन से उठकर उस तेजस्वी बालक को गले लगा लिया।

संन्यासी की प्रतीक्षा और उस ब्रह्मचारी की खोज समाप्त हुई। संन्यासी गोविंद भगवत्पाद ने ब्रह्मचारी शंकर को विधिवत संन्यास की दीक्षा दी और अपना परम्परागत ज्ञान को शंकर को सौंप दिया। यही ब्रह्मचारी शंकर कालांतर में आदि गुरु शंकराचार्य के नाम से जाने मए जिन्होंने महाराज सुधन्वा की सहायता से वैदिक धर्म को पुनर्प्रतिष्ठित किया।

आई.टी.सेक्टर के कुछ बेहतरीन अवसर...

आर्टिफिशल इंटेलिजेंस

आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (ए.आई.) कम्प्यूटर साइंस की एक ऐसी ब्रांच है, भविष्य में जिसका डेव्हलपमेंट चारों ओर दिखेगा। इसके अन्तर्गत ऐसी मशीनें तैयार होंगी जो मनुष्यों की तरह काम करेंगी। ये इंटेलिजेंट मशीनें प्लानिंग, स्पीच रिकॉग्निशन, लर्निंग और प्रॉब्लम सॉल्विंग के क्षेत्र में आश्चर्यजनक परिणाम देंगी।

यदि आप 'आर्टिफिशल इंटेलिजेंस' में करियर बनाना चाहते हैं तो आपको फिजिक्स, मैथ्स, बायोलॉजी और साइकोलॉजी पढ़नी चाहिए। इसके अलावा कुछ बेसिक प्रोग्रामिंग लैंग्वेज सीखना भी फायदेमंद रहेगा।

ये कोर्स आई.आई.टी. बॉम्बे, मद्रास, आई.एस. आई. कोलकाता, यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद और आई. आई.एस.सी. बेंगलुरु से किया जा सकता है। इसके बाद आपको कम्प्यूटर साइंटिस्ट, गेम प्रोग्रामर, सॉफ्टवेयर इंजीनियर और रोबॉटिक साइंटिस्ट जैसे प्रोफेशन में काम का अवसर मिल सकता है।

साइबर सिक्योरिटी

इंटरनेट के इस युग में टेक्नॉलजी ने जहाँ हमारे जीवन में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है, वहीं इसके कुछ खतरे भी सामने आए हैं। हाल के दिनों में कम्प्यूटर हैकिंग यानी आपके सिस्टम की जानकारी तक किसी और तक पहुँचने के मामले बढ़े हैं। ये न केवल किसी व्यक्ति या कंपनी के लिए अत्यन्त संवेदशील मामला है बल्कि इस प्रकार की गतिविधियों से किसी भी देश की सभी व्यवस्थाओं को खतरा हो सकता है। इसलिए आज के समय में सरकार और निजी संगठन 'साइबर सिक्योरिटी' को बहुत गंभीरता से ले रहे हैं और इस फील्ड के पेशेवरों की मांग बढ़ी है।

इस फील्ड में करियर बनाने के लिए साइबर सिक्योरिटी और फारेंसिक्स में स्पेशलाइजेशन के साथ कम्प्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग में बी.टेक किया जा सकता है। इसके बाद आप इन्फॉर्मेशन सिक्योरिटी ऐनालिस्ट, सिक्योरिटी ऐडमिनिस्ट्रेटर, सॉफ्टवेयर डेव्हलपर, साइबर पॉलिसी ऐनालिस्ट जैसे पदों पर अपनी सेवाएं दे सकते हैं।

नैनो टेक्नॉलाजी

ये टेक्नॉलाजी छात्रों के बीच काफी लोकप्रिय हो रही है। इसके अन्तर्गत फूड एंड बेवरेज, मेडिसिन, एग्रीकल्चर, बायो टेक्नॉलाजी, स्पेस रिसर्च आदि की बड़ी सूक्ष्मता से जाँच पड़ताल की जाती है। नैनो टेक्नॉलाजी आकर्षक अवसर मुहैया कराती है।

क्लाउड कम्प्यूटिंग

क्लाउड कम्प्यूटिंग ऐसी तकनीक है जो हमें इंटरनेट पर आभासी संसाधनों को उपलब्ध कराती है।

जिन छात्रों के पास कम्प्यूटर साइंस में इंजीनियरिंग की डिग्री है वे आसानी से इस फील्ड में करियर बना सकते हैं। वैसे क्लाउड कम्प्यूटिंग सर्टिफिकेशन लेने के बाद इस फील्ड में प्रवेश करना सबसे अच्छा तरीका है। इसके बाद आप सॉफ्टवेयर आर्किटेक्ट, आई.टी.आर्किटेक्ट, टेक्निकल कंसल्टेंट, क्लाउड सॉफ्टवेयर इंजीनियर जैसे पदों पर काम कर सकते हैं।

ग्राफिक्स डिजाइनिंग

ग्राफिक डिजाइनिंग बहुत ही व्यापक और रोचक फील्ड है। ग्राफिक डिजाइनर का काम प्रोग्राम को अट्रैक्टिव बनाना है। ग्राफिक डिजाइन वह आर्ट है, जिसमें टेक्स्ट और ग्राफिक के द्वारा किसी मैसेज को लोगों तक इफेक्टिव तरीके से पहुँचाया जाता है। ये मैसेज ग्राफिक्स, लोगो, ब्रोशर, न्यूज लेटर, पोस्टर या फिर किसी भी रूप में हो सकता है।

आप इस फील्ड में सर्टिफिकेट कोर्स, डिप्लोमा कोर्सेज या बैचलर्स, मास्टर और डॉक्टरेट डिग्री ले सकते हैं। इसके लिए हमारे देश में नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन, नई दिल्ली, आई.आई.टी. कानपुर और बॉम्बे, एम.आई.टी. इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन (पुणे), सिंबायॉसिस इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन (पुणे) लेह कॉलेज, डब्ल्यू.एल.सी.आई. (नई दिल्ली) आदि।

बिजली महादेव मन्दिर
(कुल्लू, हिमाचल प्रदेश)

कुल्लू से 26 कि.मी. की दूरी पर, चंसारी बस स्टैंड से 3 कि.मी. और मनाली से 60 कि.मी. की दूरी पर स्थित बिजली महादेव मंदिर हिमाचल प्रदेश के पवित्र मन्दिरों में से एक है। यह कुल्लू घाटी में लगभग 2,460 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। भगवान शिव को समर्पित यह मन्दिर मथन पहाड़ी पर स्थित होकर पार्वती, गरसा, भुंतर और कुल्लू पहाड़ियों से घिरा हुआ है। बिजली महादेव का ट्रेक हिमाचल में सबसे अच्छे शॉर्ट ट्रेक में से एक है। मंदिर अपनी 60 फीट ऊँची ध्वजा के लिए प्रसिद्ध है जो सूर्य के प्रकाश में चाँदी की सुई जैसा चमकता हुआ दिखाई देता है। मान्यता है कि कभी आकाशीय बिजली गिरने से शिवलिंग के टुकड़े हो गए थे जिन्हें मन्दिर के पुजारी ने मक्खन और सत्तू का उपयोग करके एक साथ बाँधा था। इसी कारण इसका नाम 'बिजली महादेव' रखा गया था।

पहाड़ी शैली में निर्मित बिजली महादेव मंदिर के प्रवेश द्वार पर नंदी की एक बड़ी नयनाभिराम प्रतिमा है। इसके दरवाजे भी मूर्तियों के साथ बड़ी खूबसूरती से उकेरे गए हैं। इतिहास के अनुसार इस मन्दिर का निर्माण 8 वीं शताब्दी में किया गया था। मथन पहाड़ी की चोटी पर स्थित होने के कारण यह मंदिर काफी दर्शनीय है। इसके नीचे कुल्लू और पार्वती घाटियों के मनोरम दृश्य प्रस्तुत होते हैं। श्रावण मास की अमावस्या के दिन बिजली महादेव मंदिर में भक्त अपने पूर्वजों की पूजा अर्चना करते हैं। इस दौरान हर साल मेले का भी आयोजन किया जाता है जो तीर्थयात्रियों के बीच काफी लोकप्रिय है।

इस मंदिर तक चंसारी गांव से 3 कि.मी. की ट्रेकिंग करके पहुँचा जा सकता है। ट्रेकिंग पथ पर जल पान इत्यादि के लिए छोटी दुकानें उपलब्ध रहती हैं। बस या टैक्सी से कुल्लू से

तुम रक्षक...

- रमेश रंजन त्रिपाठी

लघुकथा

गजेन्द्र की शारीरिक क्षमता अद्भुत थी। अपने क्षेत्र में वह बड़ा प्रभावशाली था। भरापूरा परिवार था उसका। अनेक पत्नियाँ, बाल-बच्चे, नाते-रिश्तेदार और सुहृदों की कमी नहीं थी। सम्पन्नता से अभिमान पनपना स्वाभाविक था।

एक बार गजेन्द्र अपने परिवार और आत्मीयजनों के साथ जलक्रीड़ा के लिए सरोवर पर पहुँचा। पानी में उतरा। अपनी पत्नियों, बच्चों और स्वजनों के सान्निध्य में गजेन्द्र आनंदमग्न होकर जल में अठखेलियाँ कर रहा था। उनके क्रियाकलापों से सरोवर में निवास करने वाले ग्राह (मगरमच्छ) के आराम में विघ्न पड़ रहा था। ग्राह को क्रोध आ गया। उसने पानी के भीतर आनंदक्रीड़ा कर रहे गजेन्द्र का पैर पकड़ लिया।

गजेन्द्र को अपनी अपार शक्ति का घमंड था। उसने एक झटका देकर ग्राह को दूर करना चाहा। परंतु, जल का जीव जल में अत्यधिक बलशाली होता है। गजेन्द्र ग्राह से अपना पैर नहीं छुड़ा सका। उसने अपनी पूरी ताकत लगा दी। गजेन्द्र के साथ उसकी पत्नियों, संतानों और स्वजनों ने भी ऐड़ी-चोटी का जोर लगा दिया। गजेन्द्र और ग्राह के मध्य घंटों तक युद्ध चलता रहा। परंतु, ग्राह ने गजेन्द्र को नहीं छोड़ा। गजेन्द्र असहाय होने लगा। पत्नियों, संतानों और परिजनों ने हार मान ली। वे धीरे-धीरे उदास मन और भीगे नेत्रों से घर को लौटने लगे। कुछ समय पश्चात गजेन्द्र वहाँ अकेला रह गया, निराशा घेरने लगी। ग्राह उसे खींचता हुआ गहरे पानी के भीतर लिए जा रहा था। गजेन्द्र को अपना अंत समय नजर आने लगा। पत्नी, बच्चे, परिजन, मित्र सभी उसका साथ छोड़ चुके थे, मृत्यु सामने खड़ी थी, सभी आशाएँ समाप्त हो चुकी थीं, शारीरिक बल की तुच्छता और सभी सहारे व्यर्थ सिद्ध हो चुके थे। तब गजेन्द्र को भगवान याद आए।

डूबते हुए गजेन्द्र ने सूंड से एक कमल-पुष्प तोड़ा और ईश्वर से रक्षा की गुहार लगाने लगा। 'श्रीमद् भागवत महापुराण' में यही 'गजेन्द्र स्तुति' है। उसकी करुण पुकार सुनकर श्रीहरि दौड़े चले आए। उन्होंने ग्राह से गजेन्द्र की रक्षा की।

'मॉरल ऑफ द स्टोरी' समझाने की आवश्यकता है क्या?

समविद गुरुकुलम् सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में

श्री हनुमान जयंती पर नवीन शिक्षा सत्र का शुभारंभ

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

हनुमान जयंती का पावन पर्व देश भर में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है। बल, बुद्धि और विद्या के प्रदाता श्री हनुमन्तलाल का जन्मोत्सव विगत 6 अप्रैल को वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के समविद गुरुकुलम् सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में नवीन शिक्षा सत्र के शुभारंभ सहित मनाया गया। पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन मार्गदर्शन में संचालित इस स्कूल में श्री हनुमन्तलाल के पूजन अर्चन एवं सुन्दरकाण्ड के साथ विद्यार्थियों ने शैक्षणिक सत्र 2023-24 में प्रवेश किया।

वात्सल्य ग्राम के मीडिया प्रभारी डॉ.उमाशंकर 'राही' ने जानकारी देते हुए बताया कि इस पुनीत अवसर पर पूज्या दीदी माँ जी ने श्री हनुमन्तलाल का पूजन करके आयोजन का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि -'उत्साहित मन से किए गए कार्य सदैव सफल होते हैं। हृदय यदि उमंग से भरा हो तो कठिन से कठिन कार्य भी सहज लगने लगता है। संकल्प एवं इच्छाशक्ति में दृढ़ता हो तो किसी भी कार्य में सफलता मिलना असंभव नहीं है। हनुमान जी इसी इच्छाशक्ति के साथ सीता माता का पता लगाने निकले थे। मार्ग में उन्हें मैनाक पर्वत, सुरसा, सिंहिका एवं लंकिनी जैसे अनेक अवरोध मिले किन्तु वे तनिक भी विचलित नहीं हुए और उनको परास्त करते हुए अपने लक्ष्य तक जा पहुँचे। मनुष्य जीवन का भी 'मैनाक' के रूप में प्रलोभन, 'सुरसा' के रूप में प्रतिस्पर्धा, 'सिंहिका' के रूप में ईर्ष्या और 'लंकिनी' के रूप में मेरुबुद्धी से सामना होता रहता है। जो लोग इन सब पर विजय प्राप्त कर लेते हैं उन्हें लक्ष्य तक पहुँचने से फिर कोई नहीं रोक पाता। हनुमान जी ने लंका जलाने के बाद उसका श्रेय स्वयं न लेकर भगवान राम को दिया। यह सत्य है कि ईश्वर की इच्छा के बिना हम कुछ कर नहीं सकते। सेवक बनना है तो हनुमान जी के समान बनना चाहिए जो प्रभु राम की इच्छा का प्रत्येक कार्य करने के बाद भी अपने मन में अहंकार नहीं लाते।'

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सी.ओ. सदर श्री प्रवीण कुमार एवं एस.एच.ओ. श्री विजय कुमार ने आयोजन को प्रतिष्टा प्रदान की। स्वामी सत्यशील जी, श्री प्रमोद गर्ग, श्री महेश खंडेलवाल, सुश्री सुमन जी, श्रीमती आस्था भारद्वाज एवं श्री शिशुपाल सिंह सहित समस्त विद्यालय परिवार आयोजन में सम्मिलित हुआ

SAMVID GURUKULAM
SR. SEC. SCHOOL
हनुमान जयंती
सुन्दरकाण्ड

संस्कार ही व्यक्ति की पहचान होते हैं

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

सायन (महाराष्ट्र)

विश्व हिन्दू परिषद द्वारा सायन के कोलीवाड़ा स्थित हनुमान टेकड़ी के एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने कहा कि -'हमें अपने मन को ईश्वर के चिन्तन में लगाना चाहिए क्योंकि हमारा मन ही है जो जीवन को भार समझने लगता है। हमारा मन जब ईश्वर के चिन्तन में लग जाता है तो वो जीवन को उपहार समझने लगता है। जब हमारा हृदय उन्मुक्त होता है तो मस्तिष्क असीम होता है। जीवन समर्पित होता है तो जीवन का आनन्द ही अलग होता है। जीवन की नीरसता समाप्त हो जाती है और जीवन में आनंद बरसने लगता है। जीवन उत्सव बन जाता है। स्मरण रखियेगा कि बड़े भाग्य से मनुष्य का शरीर मिलता है। इस पूर्ण समर्पण के साथ लोगों की सेवा में लगाना चाहिए।' परिवारों के छिन्न होते ताने-बाने पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि -'किसी भी परिवार की एकजुटता में संस्कारों का बड़ा महत्व होता है। संस्कार ही व्यक्ति की पहचान होते हैं। बच्चों में संस्कार माता-पिता से ही आते हैं, इस सत्य को समझने की आवश्यकता है। हम अपने बच्चों में यदि परस्पर प्रेम के संस्कार नहीं रोपेंगे तो कल जाकर परिवार का बिखरना निश्चित है। संस्कार व्यक्ति के चेहरे पर दिखाई देते हैं। इतना ही नहीं, माता पिता के संस्कार तो बच्चों के कार्य, व्यवहार, आचरण, भाव और चरित्र सभी में दिखाई देते हैं। माता-पिता जैसा व्यवहार करते हैं, बच्चे उसका अनुकरण करते हैं। माता-पिता बच्चों के आदर्श होते हैं। बच्चों पर माता-पिता के गुणों का प्रभाव होता है।'

इस अवसर पर आयोजन में विश्व हिन्दू परिषद के श्री जोग सिंह, श्री सुरेश भगेरिया, श्री रामचन्द्र रामुका, श्री दिनेश तहलियानी तथा श्री देवकीनन्दन जिन्दल सहित अनेक गणमान्यजन एवं बड़ी संख्या में नगरवासी सम्मिलित हुए।

आध्यात्मिक मार्गदर्शन...

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन स्थित समविद गुरुकुलम् सीनियर सेकेण्डरी स्कूल की छात्राओं को अपना पावन मार्गदर्शन प्रदान करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

दीदी माँ का ब्रज प्रेम

- सुभाष ढल

ब्रज चौरासी कोस की अपनी अलग मान्यता एवं महत्व है। विश्वास है कि चौरासी कोस की परिक्रमा लगा लेने से वैतरणी सहज और सरल हो जाती है। ब्रज की भूमि है ऐसी है कि यहाँ की रज में ही प्रभु से सीधा साक्षात्कार होता है और ब्रज भाषा की आत्मीयता जीवन में रस घोल देती है। महाकवि सूरदास ने वात्सल्य प्रभाव को ब्रज भाषा से जिस तरह साझा किया उसकी आत्मीयता को व्यक्त नहीं किया जा सकता सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। रहीम, रसखान, केशव, घनानंद और बिहारी आदि कवियों ने ब्रजभाषा को आत्मसात कर इसकी विशिष्टता को स्वीकारा ही नहीं वरन इस भाषा के घटक भी बने। पंजाब प्रांत में अवतरित परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की अपनी बोली 'पंजाबी' थी। स्वाभाविक भी है, बहुत अच्छी पंजाबी बोलती हैं। परम पूज्य गुरुदेव युगपुरुष अनन्तश्री विभूषित स्वामी परमानंद जी महाराज के सानिध्य में दीक्षा ली और हर परीक्षा में सर्वोत्कृष्टता प्राप्त करने के बाद कर्मक्षेत्र के लिए उन्होंने ब्रज भूमि का चयन किया। निःसंदेह, ब्रज क्षेत्र का चयन करते समय उनका ब्रज भाषा के प्रति भी लगाव और झुकाव भी रहा होगा।

श्री धाम वृन्दावन ऐसा तीर्थ है जहाँ अन्य किसी तीर्थ का बिलकुल भी प्रभाव नहीं है। यहाँ योगेश्वर का निरन्तर प्रवास रहता है और यही कारण है श्री धाम वृंदावन के समक्ष सभी तीर्थ नतमस्तक हैं। परम पूज्य दीदी माँ ने यहाँ वात्सल्य का गठन किया। धीरे-धीरे कारवाँ बढ़ता चला गया। सेवा का यह क्षेत्र विस्तृत हुआ और एक अनूठी पहल के अन्तर्गत वात्सल्य ग्राम आश्रम ने विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्थापित किया। वात्सल्य की अनूठी परिभाषा अपार श्रद्धा के कारण बनी। अनुयायियों में गुणात्मक वृद्धि हुई और पत्थरों को तराशकर हीरा बनाया। इन सबके पीछे दीदी माँ की सोच में ब्रज भाषा के प्रति सम्मान अवश्य रहा होगा।

आज दीदी माँ बहुत अच्छी ब्रज भाषा बोलती हैं। अपने व्याख्यानों एवं प्रवचनों में ब्रज भाषा के गीतों को प्रस्तुत करती हैं तो वे केवल 'दीदी माँ' न होकर 'ब्रज की लाडली बेटी' के रूप में मानी जाती हैं। ऐसा मैंने भी अनुभव किया। ब्रज भाषा दीदी माँ के व्यक्तित्व और कृतित्व में समाहित है। पंजाबी बोली की एक अलग मान्यता है। अगर कोई पंजाबी बोली बोलने वाला हिन्दी में बोलता है तो पंजाबी लहजा उसमें समाहित होता है और ब्रज भाषा बोलना तो किसी पंजाबी के लिए असंभव सा है। ब्रज भाषा की मिठास उसकी आत्मीयता, पारदर्शिता, स्वच्छन्दता आदि जीवन में नए रंगों को घोलती है।

आज मैं आपसे एक और बात साझा करना चाहता हूँ। दीदी माँ से मेरा लगाव प्रारंभ से ही रहा है। 1989 में पहली बार मैंने नई दिल्ली के मानसरोवर गार्डन में एक माता के मंदिर में उनका प्रवचन लाभ लिया था। पूज्या दीदी माँ के व्यक्तित्व को मैं जब भी देखता हूँ तब उसमें नवीनता का प्रभाव मेरी दृष्टि में आता है। सत्ता के गलियारे को दीदी माँ ने अस्वीकार करके अध्यात्म के साथ सेवा को समन्वयित कर ब्रज की रज और ब्रज भाषा को अपने जीवन में सार्थक किया।

साध्वी ऋतम्भरा सिर्फ साध्वी ऋतम्भरा थीं लेकिन वो ब्रज में प्रवेश करते ही 'दीदी ऋतम्भरा बन गईं। सत्कर्मों ने उन्हें वात्सल्यमूर्ति पूज्या दीदी माँ बना दिया। 'माँ' का दर्जा उन्होंने ब्रज भूमि में ही पाया और इस पर स्पष्ट तौर पर ब्रज भाषा की छाप पड़ रही होगी। बृजभाषा की अनूठी शैली को दीदी मां ने आत्मसात किया । इस भाषा से प्रेम करना प्रत्येक

ब्रजवासी का कर्तव्य है। इस भाषा को चलन में लाना प्रत्येक ब्रजवासी का दायित्व है। इस भाषा को पुनः प्रतिष्ठापित करना प्रत्येक ब्रजवासी का मूल लक्ष्य होना चाहिए।

मैंने अवधी भाषा बोलने वालों को देखा है। मैंने भोजपुरी में बात करने वालों को सुना है। चाहे वो कितने भी शिक्षित होंगे लेकिन किसी अन्य भाषा को नहीं बोलेंगे। वो अपनी भाषा में ही बोलेंगे। परन्तु जब दो ब्रजवासी आपस में मिलते हैं तो वे अपनी भाषा बोलने में शर्म महसूस करते हैं। यह देख कर वेदना होती है। ब्रज भाषा के प्रति जागरूकता का होना बहुत जरूरी है। दीदी माँ जी इसका स्पष्ट उदाहरण हैं। जिनका ब्रजक्षेत्र से दूर-दूर का भी वास्ता नहीं था। वे ब्रज भाषा से अनभिज्ञ थीं। यदि मैं यह कहूँ कि ब्रज भाषा के प्रचार एवं प्रसार में उनका भी योगदान है, तो यह अनुचित नहीं होगा।

राजलक्ष्मी समविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल के छात्र आदित्य को मिली बड़ी उपलब्धि

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की पावन प्रेरणा से देवभूमि हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में नालागढ़ तहसील के ग्राम-वारियां में संचालित 'राजलक्ष्मी समविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल' छात्रों की प्रतिभाओं को निखार रहा है। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा पिछले वर्ष देशभर में 21 ऐसे स्कूलों को चयनित किया गया था, जो उसके अन्तर्गत सैनिक स्कूलों के रूप में कार्य करेंगे, 'राजलक्ष्मी समविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल' उन्हीं स्कूलों में से एक है। विगत दिनों इसी स्कूल के एक छात्र कैडेट आदित्य सिंह दहिया का चयन 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (इसरो) द्वारा अपने 'टू वीक रेजिडेंशियल प्रोग्राम' के लिए किया गया है। देश में भविष्य के युवा वैज्ञानिकों की खोज में इसरो का 'यंग साइंटिस्ट प्रोग्राम - युविका 2023' आगामी 15 से 26 मई तक आयोजित है।

इसकी चयन प्रक्रिया के अन्तर्गत 'इसरो' की ऑनलाइन क्विज़ में भाग लेकर आदित्य ने 150 छात्रों की पहली सूची में 49 वें स्थान पर अपना नाम दर्ज करवाया। यह अवसर मात्र कक्षा दसवीं के छात्रों के लिए उपलब्ध था और छात्रों द्वारा इस कार्यक्रम के लिए समविद सैनिक स्कूल के साइंस टीचर्स सुश्री वीना पठानिया तथा श्री नितिन शर्मा की प्रेरणा से पंजीकरण करवाया गया।

'इसरो' द्वारा चयनित सैनिक छात्र कैडेट आदित्य सिंह दहिया मूलतः करनाल (हरियाणा) के निवासी हैं। श्रीमती सीमा रानी श्री जोगिंदर सिंह के पुत्र आदित्य अत्यन्त प्रतिभाशाली हैं। इस विद्यालय में प्रवेश पाकर उनकी प्रतिभा को और भी निखार मिला है। विभिन्न विद्यालयीन गतिविधियों के साथ ही स्काउट एण्ड गाइड कैंप का लाभ इस चयन में आदित्य को मिला। कक्षा आठवीं के प्राप्तांकों की भी इस चयन में बड़ी भूमिका रही। भविष्य में आदित्य सिंह भारतीय वायुसेना का ज्वाइन कर एक फाइटर पायलट के रूप में देश को अपनी सेवाएँ प्रदान करना चाहते हैं।

इसरो की इस कार्यशाला में चयनित होने पर विद्यालय के प्रधानाचार्य ने सैनिक छात्र को शुभकामनाए प्रदान करते हुए कहा कि 'इस पाक्षिक कार्यशाला से अवश्य ही इस सैनिक छात्र को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में अत्यधिक सहायता प्राप्त होगी। समविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल के अन्य सैनिक छात्रों को भी इस उपलब्धि से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिए।'

नालागढ़ स्थित 'राजलक्ष्मी समविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल' के छात्र कैडेट आदित्य सिंह दहिया, जिनका चयन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा अपने 'टू वीक रेजिडेंशियल प्रोग्राम' के लिए किया गया है।

बधाई हो आदित्य

विश्व पटल पर भारत का नाम उज्जवल करो

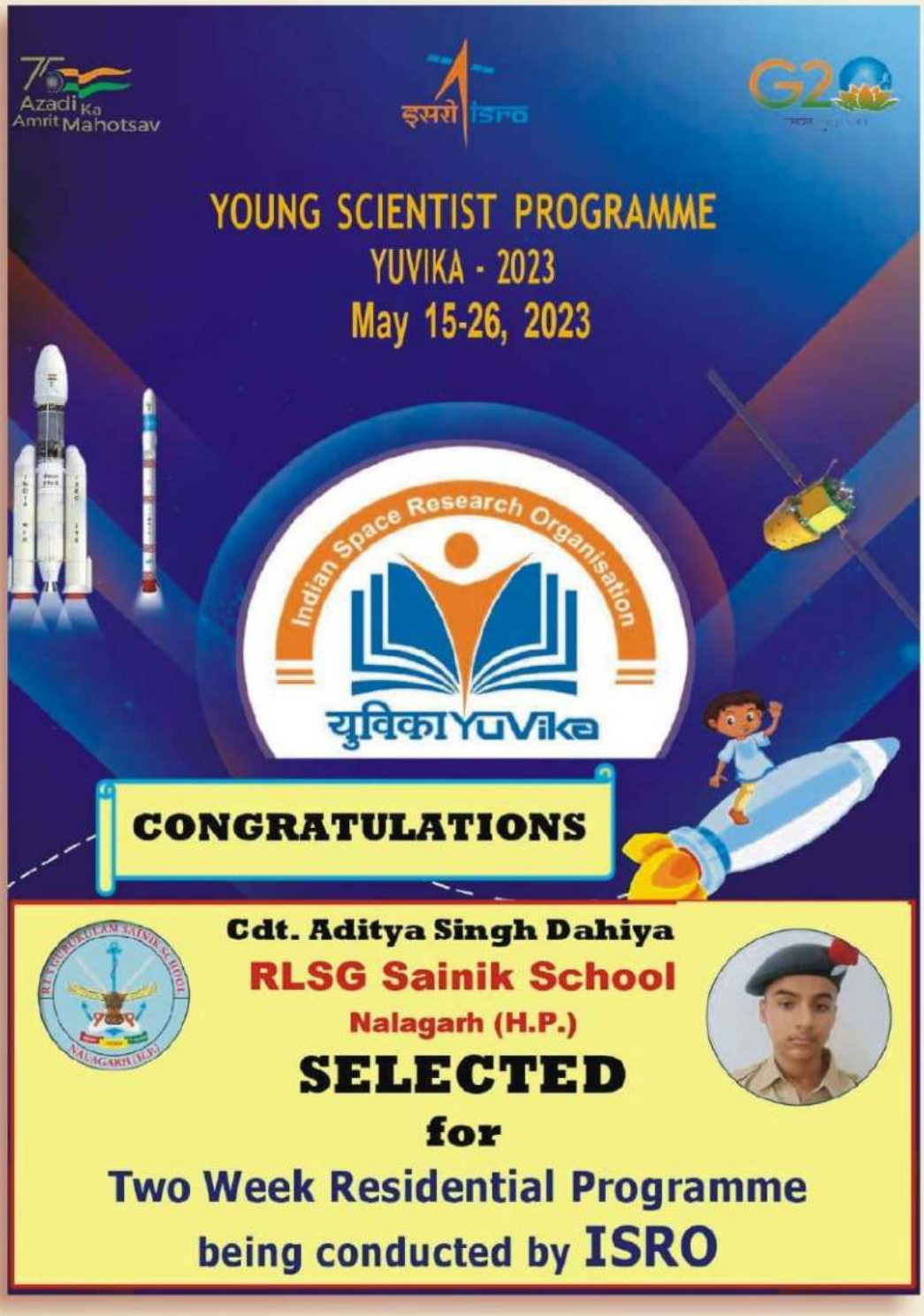

पूज्या दीदी माँ जी के आगामी कार्यक्रम

परम वात्सल्य सत्संग

पूज्या दीदी माँ जी द्वारा उद्बोधन
दिनांक : 8 एवं 9 मई 2023
समय : सायं 5 से रात्रि 7 बजे तक
अलंकरण एवं समापन समारोह
दिनांक : 10 मई 2023
समय : सायं 5 से रात्रि 8 बजे तक
स्थान : राजलक्ष्मी समविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल
ग्राम–वारियां, तहसील–नालागढ़, जिला–सोलन (हिमाचल प्रदेश)
आयोजक : युगचेतना वात्सल्य पीठ, नालागढ़
सम्पर्क नम्बर :98166 63640, 98260 65031, 94180 70009

श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ महोत्सव

कथाव्यास : पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी
दिनांक : 19 मई से 25 मई 2023 तक
समय : प्रतिदिन दोपहर 3 से सायं 6 बजे
स्थान : ग्राम चाँदनी–कोंच (जिला–जालौन), उत्तरप्रदेश
पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री शांतिस्वरुपानन्द जी महाराज (संस्थापक –चारधाम मन्दिर, उज्जैन) की जन्मस्थली
आयोजक : श्री राधाकृष्ण मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव समिति
सम्पर्क नम्बर : 93990 79114

श्रीराम कथा महोत्सव

कथाव्यास : पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी
दिनांक : 30 मई से 5 जून 2023 तक
समय : प्रतिदिन दोपहर 2 से सायं 5 बजे
स्थान : श्री चौबीस अवतार मन्दिर ग्राम–देपालपुर, (जिला–इन्दौर), मध्यप्रदेश
आयोजक : श्री पुंजराज पटेल सामाजिक सेवा समिति
सम्पर्क नम्बर : 93990 79114

ओमप्रकाश गोयनका
9810011579, 8285011579

Rasila
Mango Extravaganza
Alphonso Mango Jalebi
Alphonso Mango Burfi
Alphonso Mango Sandwich

Rasila Mango Bar EXPORT QUALITY
LNG MANGO BAR
दुर्गा लाजवाब आम पापड़
Dilbahar's

DURGA TRADERS

IMPORTERS & EXPORTERS
SPECIALIST IN : AAMPAPAR & DIGESTIVE CHURAN GOLI

188, Tilak Bazar, Delhi-110006
Tel.: 23978222, 23913150, 23954012, 23921464
E-mail : durgatraders188@hotmail.com

Postal Regd. No. DL(E)20/5231/2022-24
DELMUL/2006/16716
Postal Date : 9th & 10th of Every month

Pujya Didi Maa Sadhvi Ritambhara Ji

An ISO 9001: 2000 Certified School

SAMVID GURUKULAM SR.SEC. SCHOOL

CBSE affiliated (# 2131180)
Co-Education up to Class Vth; Residential and Day School for Girls
Play Group - Grade XII (Science, Commerce, Humanities)

TECHNOLOGY ENABLED SCHOOL
Powered By : Extramarks

We bring out the 'winner in your child'

- State of the art infrastructure
- Low teacher student ratio
- Total Personality Development
- Wi-Fi Campus
- Counseling Cell
- Center of performing arts
- Safe guarding Indian culture as part of world heritage
- Science, Computer & Mathematics Lab
- Regular Excursions
- Centrally Air cooled Hostel for girls.
- SANSKARAM CLASSES: Learning life skills through Value Education
- NANHI DUNIYA: Introduction of children to nature
- SPORTS ACADEMY: Horse Riding, Skating Football, Hockey, Basket Ball, Lawn Tennis, Table Tennis, Judo-Karate, 400M Track
- MUSIC: Vocal & Instrumental
- DANCE: Bharatnatyam, Kathak, Contemporary
- Transport facility available

Vatsalya Gram, Mathura - Vrindavan Marg, P.O. - Prem Nagar,
Vrindavan - 281003 (U.P.) Mobile No. 94127 77152 & 94127 77154
Website : www.samvidgurukulam.org
Like us at : www.facebook.com / samvid4u
email : principal@samvidgurukulam.org